About the Package

At the behest of MHRD, NCERT has developed exemplar material on continuous and comprehensive evaluation (CCE) for the elementary stage in all curricular areas. The material has been developed with wide consultations with subject experts, practitioners and educationists in a series of meetings and developmental workshops at NCERT. The package has been field tested in schools by the teachers after orientation by the members involved in the development of the package. The underlying idea of developing the exemplar CCE material is to provide some examples on how CCE can be used effectively by the teachers in various curricular areas till the elementary stage. The package would facilitate the teachers to implement CCE in the classroom meaningfully touching different facets of CCE i.e. how to carry out assessment *during the teaching-learning process,* assessment after teaching-learning process, recording *and* reporting the child's progress, etc. At the primary stage, generally one teacher teaches all the subjects. Therefore, one comprehensive document has been developed covering examples from different subjects. This would not only help primary teachers to follow an integrated approach to teaching-learning across different subjects but also reduce the curricular burden by avoiding overlap of the content. However, at the upper primary stage, subject-wise material has been developed in Science, Mathematics, Social Sciences, Hindi, English, Urdu and Arts Education. The examples given in this package are feasible in a classroom having teacher-pupil ratio as per the RTE norms (1:30 for primary stage and 1:35 for the upper primary stage). The examples given in the material may be adapted/adopted by the States and UTs as per their needs. Broadly, the document includes three sections:

- **Section I:** Section I begins with an overview which clarifies the need of this package and some misconceptions about CCE that are prevailing in the system. The section develops an understanding on continuous and comprehensive evaluation in the context of Right to Education Act-2009.

- **Section II**: This section provides subject-wise examples which show how assessment process needs to be followed so as to use assessment as an in-built component of teaching-learning process focusing on assessment for learning (formative assessment). This section also provides criteria for assessment for each subject, spelt out in the form of 'indicators' given in Annexure I. These are purely suggestive in nature. The examples also elaborate how *assessment of learning* (summative assessment) can be used by the teacher and also show various methods that can be used to assess child's progress rather than depending on paper-pencil tests only. The section also

suggests what kind of data needs to be recorded by the teacher and what kind of assessment data needs to be reported in the report card.

- **Section III**: Based on the examples given in section II, this section provides guidelines for practitioners about necessary steps to be followed for implementing CCE. It informs the teachers that if they use assessment as an in-built part of teaching learning process, what kind of preparedness is required e.g. what type of methods to be used for assessment, what can be the various sources for collecting data, what kind of information is to be recorded for reporting and how to communicate the progress of children in a comprehensive manner. This section also provides guidelines for teacher educators and administrators on their role to make CCE as meaningful as possible.

- The package also includes a video film on '*CCE in mathematics classroom',* particularly at the primary level. The film depicts through examples how a teacher assesses children while teaching-learning process is going on, and what are the ways to provide feedback to children during the process itself. This would also clarify some misconceptions related to various aspects of CCE.

यह पुस्तक

यह पुस्तक सतत और समग्र मूल्यांकन को पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया के साथ जोड़कर देखती है। मूल्यांकन प्रक्रिया स्कूली शिक्षा का सबसे संवेदनशील मुद्दा है, इसीलिए इस पर कुछ सामग्री तैयार करना भी सबसे जटिल प्रक्रिया है। एन.सी.ई.आर.टी. ने इस प्रक्रिया से जूझते हुए एक पहल की है, जो आपके सामने इस पुस्तक के रूप में प्रस्तुत है। इस सामग्री को तैयार करने की प्रक्रिया में इसे स्कूलों में फील्ड परीक्षण करके भी देखा गया।

फील्ड परीक्षण में अलग-अलग बातें निकल कर आई। सभी ने सामग्री को सराहा है, साथ ही प्रशासनिक समस्याएं उन्हें ऐसा कर पाने में बाधा पहुंचाती है, इसका जिक्र भी किया है। अधिकांश अध्यापकों का मानना है कि सामग्री अच्छी है पर इसे करने के लिए प्रशासन को व्यवस्था में ढील देनी होगी। अध्यापकों का यह भी कहना है कि जिस तरह की सृजनात्मकता की माँग यह सामग्री करती है उससे बच्चों की सीखने की गति निश्चय ही बेहतर होगी। पर ऐसा करने के लिए हमारे पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया के साथ-साथ परीक्षा और मूल्यांकन प्रक्रिया में जिस तरह के बदलाव चाहिए वह स्कूलों में हो नहीं पा रहा है। जाहिर है हमारी मूल्यांकन प्रक्रिया अब भी बच्चों की सृजनात्मकता को जगह नहीं दे पा रही। अध्यापक के साथ-साथ प्रशासन को इसके लिए न केवल लचीला होना होगा, बल्कि सतत और समग्र मूल्यांकन की मूल सोच पर गहराई से एक बार फिर से सोचना और विचारना होगा।

पूरी सामग्री को मोटे तौर पर तीन हिस्सों में बांटा गया है। **पहले भाग** में सतत और समग्र मूल्यांकन क्या है तथा इसका भाषा से क्या संबंध बनता है—इस पर बात की गई है। **दूसरे भाग** में एन.सी.ई.आर.टी. के पाठ्यपुस्तकों से कुछ उदाहरण लिए गए हैं, जिन में पढ़ने-पढ़ाने की प्रक्रिया और आकलन की प्रक्रिया को जोड़कर देखा गया है। **तीसरे भाग** में रिकार्डिंग, रिपोर्टिंग किसको और कैसे किया जाए तथा प्रश्नों का स्वरूप कैसा हो इन सब मुद्दों पर बातें हुई हैं। इस पुस्तक में **विशेष सामग्री** के तौर पर **अध्यापक और प्रशासन संबंधी चुनौतियाँ, आकलन करते समय..., अध्यापक की चुनौती** जैसे शीर्षकों में उन बातों की चर्चा की गई है जो सतत और समग्र मूल्यांकन करते समय विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। **कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे?** शीर्षक से भाषा में आकलन संबंधी अवधारणात्मक भूलों पर ध्यान दिलाने की कोशिश की गई है। हमें उम्मीद है कि यह सामग्री आकलन और मूल्यांकन प्रक्रिया की दिशा में कुछ नया और सार्थक सोचने और विचारने का आधार तैयार कर सकेगी। जाहिर है यह सामग्री अंतिम नहीं है, इसे और बेहतर बनाने के लिए आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

विषय-सूची

भाग-1

आकलन और मूल्यांकन क्यों? 1

सतत और समग्र मूल्यांकन क्या है? 1

भाषा क्यों? 2

उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा समझ के आकलन बिंदु 3

भाग-2

भाषा-समझ को जानें पाठ के ज़रिए 6

जहाँ पहिया है 6

अपूर्व अनुभव 12

चाँद से थोड़ी-सी गप्पें 15

भाग-3

मूल्यांकन कैसे-कैसे? 18

आकलन करते समय... 20

रेकार्डिंग/रिपोर्टिंग किसको और कैसे? 20

रिपोर्ट–बच्चे द्वारा की जा रही प्रगति को मापना 21

अपने लेखन का स्वयं आकलन 22

आकलन योजना 23

मूल्यांकन एक सामूहिक प्रक्रिया 25

विशेष

अध्यापक और प्रशासन संबंधी टिप्पणियाँ

आकलन करते समय 3, 5, 11, 12, 13, 14, 16, 17, 20, 21, 23

प्रशासन तथा अध्यापक के लिए चुनौती

अध्यापक की चुनौती

टीचर्स रिफ्लेक्शन-बच्चों के अधिगम को समुन्नत करना

कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे? 1, 2, 3, 4, 5, 13

भाग 1

आकलन और मूल्यांकन क्यों?

"बर्नाड शा के नाटक 'सीजर और क्लिओपैट्रा' में क्लिओपैट्रा अपनी परिचारिकाओं से कहती है कि सीजर ने उसे कहा है कि वह अपनी परिचारिकाओं को, जो कुछ वे चाहें, कहने की छूट दें। और जब क्लिओपैट्रा ने जानना चाहा कि इस छूट का मकसद क्या है तो सीजर का उत्तर था, "ताकि तुम यह जान सको कि वे क्या हैं?" हमें भी अपने छात्र-छात्राओं के बारे में जानना है कि आखिर वे क्या हैं? और यह जानने के लिए हमें फाइलों में दबे छद्म मनोवैज्ञानिक निदानों को पढ़ने की आवश्यकता नहीं है जिनमें बच्चों की कमियों की लंबी फेहरिस्त हो। बल्कि आवश्यकता यह है कि हम उन्हें वैचारिक स्वतंत्रता दें। बोलने, करने की छूट दें–उस सीमा तक, जितनी किसी स्कूल में दे पाना संभव हो।" (जॉन हॉल्ट, बच्चे असफल कैसे होते हैं)

जॉन हॉल्ट की इन बातों से आप सब सहमत होंगे। आप इस बात से भी ज़रूर सहमत होंगे कि 'मूल्यांकन' के तरीकों पर हमें इस तरह सोचना होगा कि वे पढ़ने-पढ़ाने का हिस्सा बन सकें।

सतत और समग्र मूल्यांकन क्या है?

आप सब पढ़ते-पढ़ाते हुए जरूर हॉल्ट की तरह इन बातों से जूझ रहे होंगे और निश्चय ही कुछ नए-नए तरीके भी ढूँढ़ रहे होंगे। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर **सतत और समग्र मूल्यांकन** की बात की जा रही है। **मूल्यांकन क्या है?** इस पर तो हमने कई तरह से सोचा पर बात जब **सतत समग्र मूल्यांकन** की हो रही हो तो हमें यह सोचना ही होगा कि **सतत और समग्र** क्या है?

कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे?

सतत के माने बार-बार परीक्षाएँ और जाँच का सिलसिला, इसलिए बहुत सारे टेस्ट ले रहे हैं?

कहीं ऐसा तो नहीं कि मूल्यांकन की बात कहकर हम बच्चों से वह सब करवा रहे हैं जो कि कक्षायी व्यवस्था में हम उनसे करवाना चाहते हैं और कहीं यह भी कि मूल्यांकन के ज़रिए विद्यार्थियों को भिन्न-भिन्न श्रेणियों में बाँट रहे हैं, जैसे कि 'होशियार', 'कम सीखने वाले', 'धीमी गति से सीखने वाले' आदि-आदि व्यवहार प्रतिमानों के अनुसार वर्गीकरण–विद्यालय में तीन-चार साल बिताने के बाद बच्चों को एक बात बहुत अच्छी तरह से समझ में आ जाती है कि वे विद्यालय में जो कुछ भी कर रहे हैं (अध्यापक के कहने पर) उसकी किसी-न-किसी प्रकार से जाँच की जाएगी और उन्हें उस जाँच के नतीजों पर आँका जाएगा। ऐसी समझ बनते ही बच्चों का ध्यान सीखने की प्रक्रिया से हटकर 'परिणाम' और 'मूल्यांकनकर्ता' की ओर खिंच जाता है। सीखने की प्रक्रिया एक खोज, मज़ा न रहकर सवाल-जवाब देने का खेल बन जाती है। सफल होने का या सही जवाब देने का घोर दबाव माहौल को बेजान सा बना देता है।

साथियों आप सब बच्चों के साथ पहले दिन कक्षा में होते हैं, उस दिन से सत्र के अंतिम दिन तक बच्चे की प्रगति का आकलन आप जाने-अनजाने कर रहे हैं। न केवल बच्चे का अपने पढ़ाने के तरीके को भी निरंतर बदल रहे हैं। बस ज़रूरत इस बात की है कि पढ़ने-पढ़ाने के तरीके और बच्चों के सीखने की प्रगति के उन बिंदुओं की रिकार्डिंग भी लगातार करते रहें जो आगे बढ़ने में मदद करते हैं, खुद आपको और बच्चों को। जब हम सतत आकलन की बात करते हैं तो हमें उसे समझना होगा।

आप पाएंगे कि एक अंतराल (साल में लगभग तीन बार) के बाद अब तक की रिकॉर्डिंग का विश्लेषण करने पर हर बच्चे की प्रगति एक रेखीय नहीं होगी। कई बार आप यह भी पाते होंगे कि प्रगति हमेशा अच्छी ही नहीं होगी। हो सकता है वह कई उतार-चढ़ावों के बाद जिस पड़ाव (मान लीजिए एक सत्र के बाद) पर पहुँचा है वह केवल अकादमिक नहीं होगा। मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तमाम कारण होंगे।

दरअसल जब हम **समग्र** की बात करते हैं तो ये सब मायने रखते हैं। बच्चा एक व्यक्ति के रूप में, एक समाज के रूप में, एक नागरिक के रूप में, यानी संपूर्ण मनुष्य के रूप में कैसे प्रगति कर रहा/रही है?

कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे? समग्र मूल्यांकन का मतलब है–पाठ्यक्रम की जानकारी का मूल्यांकन। इसलिए जानकारी की जाँच कर रहे हैं।

बच्चे की अकादमिक प्रगति का अवलोकन आप लगातार कर रहे होंगे, उसका रिकॉर्ड भी रख रहे होंगे। उन सबको जब आप एक साथ देखेंगे तो यह भी पाएँगे एक ही स्थिति पर बच्चे की राय भिन्न-भिन्न हो सकती है। यानी पहले दिन और सत्र अवलोकन के दिन तक भी ऐसा हो सकता है। इस दौरान बच्चे उस स्थिति पर तत्काल प्रक्रिया की बजाय ठहरकर, विचार करके समूह में बात करके, आस-पास को देख कर, अतिरिक्त जानकारी हासिल करके बहुत कुछ बदल चुका होगा।

बात जब भाषा शिक्षा की हो तो यह और जटिल प्रक्रिया बन जाती है क्योंकि भाषा पढ़ने-पढ़ाने की बात उठते ही हम कौशलों (सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना) की बात करने लगते हैं। कुछ इस तरह जैसे यह कोई शब्दों, पदों या फिर वाक्यों का ऐसा समूह मात्र है, जिसके हर वर्ण, अक्षर, शब्द, पद या वाक्यों के कुछ बने बनाए फार्मूले हैं और उन नियमों को जानते ही हम भाषा के ज्ञाता बन जाएंगे। इससे पहले हमें भाषा में मूल्यांकन क्या है, इसे समझ लेना होगा।

भाषा क्यों?

क्यों? के ज़वाब पर शायद हम यही कहेंगें कि अपनी बात दूसरों तक पहुँचाने के एक माध्यम के रूप में हम भाषा को पहचानते रहे हैं। इसीलिए हम सब यही परिभाषा पढ़ते हुए बड़े हुए कि भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। यानी भाषा के ज़रिए ही हम कुछ कहते और लिखते हैं और किसी के द्वारा कहे और लिखे को सुनते और पढ़ते हैं। इसीलिए भाषा के चार कौशलों की बात इस तरह से प्रमुख होती चली गई कि हम भूल ही गए कि कहने-सुनने वाले के पास दिमाग भी है। बेर्टोल्ट ब्रेष्ट के शब्दों में कहें तो–*'जनरल, आदमी कितना उपयोगी है/ वह उड़ सकता है और मार सकता है।/ लेकिन उसमें एक नुक्स है-/ वह सोच सकता है।'* बच्चे जो कुछ देखते या सुनते हैं उसे अपनी दृष्टि से देखते-सुनते हैं और यह कि अपनी ही दृष्टि और समझ के साथ बोलते और लिखते हैं। यह दृष्टि एक परिवेश और समाज के भीतर ही बनती है इसलिए परिवेश और समाज के बीच बन रही बच्चे की समझ को भाषा दे सकने में समर्थ बनाने की कोशिश होनी चाहिए। जबकि हो यह रहा है कि जब बच्चे स्कूल आते हैं तो घर की भाषा और स्कूल की भाषा के बीच एक द्वंद्व शुरू हो जाती है। इस द्वंद्व से उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चे जो कि किशोर वय में पहुँच रहे होते हैं, को भी जूझना पड़ता है। उनके पास अनेक सवाल हैं, अपने आस-पास के समाज और संसार से। जिसका जवाब वह ढूँढ़ रहें हैं। अगर हमारी भाषा की कक्षा उनके सवालों और ज़वाबों को उनकी अपनी भाषा दे सके तो यह इसकी सार्थकता होगी।

बहुभाषिकता

इस दृष्टि से हमें इस बात का ध्यान भी रखना ही होगा कि बहुभाषिकता हमारी ज़रूरत और ताकत है। हर बच्चा बहुत-सी भाषाओं के बीच रहते हुए अपने आस-पास से, देश से और फिर पूरी दुनिया से हिंदी में संवाद करने में सक्षम हो। इस दृष्टि से उसके आस-पास की भाषा को स्रोत की तरह इस्तेमाल करना होगा।

सभी विषयों के केंद्र में भाषा

बच्चों के इस आस-पास में–खास तौर से उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चे जो कि किशोरावस्था में पहुँच रहे हैं–समाज और विज्ञान सबकुछ शामिल है। पल-पल बदलता समाज और पर्यावरण उनकी जिज्ञासा का कारण है। ज़ाहिर है इसके लिए उन्हे भाषा की ज़रूरत है। इसलिए भाषा की पढ़ाई मात्र भाषा की कक्षा में ही नहीं बल्कि अन्य विषयों के ज़रिए भी होती है। हमें ध्यान देना होगा कि पूरी दुनिया से संवाद कायम करने के लिए हमें समाज विज्ञान, विज्ञान, पर्यावरण सभी स्तर पर हिंदी भाषा को सशक्त बनाना होगा।

ऐसी कक्षा होने पर ही भाषा कौशलों को मात्र उपयोगी और यांत्रिक होने से बचाया जा सकता है। इसे ध्यान में रखकर ही हम उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने के कुछ आकलन बिंदुओं तक पहुँचना चाहेंगे जिन्हें सृजनात्मकता की छतरी के नीचे ही रखने कि कोशिश की गई है।

उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा समझ के आकलन बिंदु

पढ़ना

यहाँ पर पढ़ने को लेकर जो आकलन बिंदु दिए गए हैं, वे पढ़ने की स्थापित संस्कृति जो पढ़ने को एक यांत्रिक कौशल के रूप में विकसित करती है, के विपरीत दिशा में जाते हैं।

> कोई नहीं जानता कि बच्चे कब अधिक जान पाते हैं, जब ब्लैकबोर्ड की ओर देख रहे होते हैं, या तब, जब एक अदम्य शक्ति (जैसे सूरजमुखी को घुमाने वाली सूर्य की शक्ति) उसे खिड़की के बाहर देखने को विवश करती है। ऐसे क्षण में उसके लिए क्या अधिक महत्वपूर्ण, अधिक लाभदायक है–ब्लैकबोर्ड के चौखटे में जड़ा तार्किक जगत या खिड़की के बाहर फैली दुनिया? जिसकी कई बार सैर पढ़ने की संस्कृति करवाती है।
>
> ***यानुश कोर्चाक की पुस्तक***
> ***'जब मैं फिर छोटा हो जाऊँगा' से साभार।***

पढ़ना मात्र किताबी कौशल न होकर एक तहज़ीब और तरकीब है। पढ़ना, पढ़कर समझने और उस पर प्रतिक्रिया करने की एक प्रक्रिया है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि पढ़ना बुनियादी तौर से एक अर्थवान गतिविधि है। हम ऐसा भी कह सकते हैं कि मुद्रित अथवा लिखित सामग्री से कुछ सन्दर्भों व अनुमान के आधार पर अर्थ पकड़ने की कोशिश पढ़ना है।

इस आधार पर कुछ आकलन बिंदु प्रस्तुत हैं–

- बच्चे साहित्य की शैलीगत विशेषताओं और विभिन्न विधाओं तथा समकालीन से परिचित हो जाते हैं।
- पाठ्यपुस्तक से इतर पठन सामग्री के प्रति रुचि प्रदर्शित कर पाते हैं।
- रचनाओं के शीर्षक पर जिज्ञासा प्रकट करते हैं।
- अध्यापक द्वारा सुनाई गई किसी रचना या लेखन के बारे में पढ़ने के लिए उत्सुकता प्रदर्शित करते हैं।
- बच्चे अलग-अलग तरह की रचनाएँ पढ़ने के प्रति उत्साह दिखाते हैं।
- मुद्रित/लिखित सामग्री/पुस्तकों से निजी संवाद बना पाते हैं।
- किसी भी पढ़ी हुई चीज को अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर पाते हैं।
- विद्यालय, घर, आस-पड़ोस, सड़कों आदि जगहों पर उपलब्ध लिखित और मुद्रित सामग्री के प्रति चौकन्नेपन का भाव रखते हैं और आवश्यकतानुसार इस्तेमाल भी करते हैं।
- पुस्तकों के आदान-प्रदान की संस्कृति में विश्वास व रुचि प्रदर्शित करते हैं।

आकलन करते समय अध्यापक की चुनौती

कभी किसी पुस्तक के बारे में चर्चा हो रही हो तो उस पुस्तक के दरवाजे तक पहुँचने की ललक पैदा होने का मतलब है पढ़ने का चस्का होना। यहाँ पर अध्यापकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। उनका काम है बच्चों को ऐसा माहौल देना जिससे वे पुस्तकों के शीर्षक/रचनाओं से आकर्षित हो उन तक पहुँचने की कोशिश करें। पढ़ने के कौशल का वास्तविक संदर्भों में आकलन करने के लिए अध्यापक की सजगता जरूरी है। जैसे–सभी बच्चों को एक रचना पढ़ने के लिए दी गई। चूँकि सभी बच्चे अपने-अपने अनुभवों के दायरे में हैं अत: जब उनसे कहा जाएगा कि मुख्य बिंदुओं का उल्लेख करें तो पता चलेगा कि सब बच्चे एक ही से बिंदुओं का उल्लेख नहीं करेंगे। क्योंकि हर बच्चे के लिए आकर्षण बिन्दु फर्क होंगे जो उसके अनुभवों के दायरे में है। यह गतिविधि के रूप में बच्चों को करने के लिए भी कहा जा सकता है–अध्यापक की चुनौती यह होगी कि आकलन करते समय एक से उत्तर की अपेक्षा न करे।

कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे?

जब हमने यह स्वीकार कर लिया कि पढ़ने का अर्थ है–पढ़े गए में से संदर्भ व अनुमान के आधार पर अर्थ ढूँढना तो पठन का आकलन करते समय कहीं हम अक्षरश:, शब्दश: उन्हीं शब्दों को बोले जाने की अपेक्षा तो नहीं कर रहे जो पुस्तक में लिखे हैं।

जब कोई बच्ची किसी नाटक के संवाद बोल रही है या किसी चरित्र का अभिनय कर रही है तो हमारी अपेक्षा यह होनी चाहिए कि वे संवादों में अपनी भाषा-शैली तथा चरित्रों में अपनी कल्पना का प्रयोग कर सके। इसकी बजाय कहीं हम उनसे आदर्शवाचन की अपेक्षा तो नहीं कर रहे।

पढ़ते समय पाठ की पुनर्रचना

पाठ की स्मृति बौद्धिक रूप से एक उच्च स्तर की गतिविधि है और मात्र रटे हुए 'टेप' चलाने के समान नहीं है। बच्चे पाठ को एक स्थायी पूर्णता के रूप में, विमर्श की स्थायी याद करने योग्य इकाई के रूप में लेते हैं और फिर पाठ को सटीक रूप में पुनर्निर्मित करने या स्मरण करने की कोशिश करते हैं–एक कहानी है–'सूरज और चाँद ऊपर कैसे गए।' एक विद्यार्थी इस कहानी को पढ़ते समय सूरज और चाँद को अंत तक सूरज और चन्द्रमा ही पढ़ती रही। इससे उसकी कहानी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यह भी देखा कि इस कहानी में आए एक वाक्य–'वह भागकर आसमान में पहुँचे' को उसने पढ़ा–'वे भगवान के पास आसमान पर पहुँचे।' विद्यार्थी ने 'भाग कर' को पढ़ा 'भगवान' और पठन के बाद बातचीत के दौरान बताया भी कि 'सूरज और चन्द्रमा आखिर में भगवान के पास पहुँच गए और वहीं रहने लगे।' यहाँ यह बात स्पष्ट होती है कि बच्चे ने अपना ज्ञान जो घर-परिवार से सीखा है कि भगवान ऊपर रहता है, उसे अपने पठन में जोड़ दिया।

सृजनात्मकता

↓

समझ की प्रक्रिया

(सुनी, देखी या पढ़ी सामग्री पर)

↓

टकराहट

(पूर्व अनुभव या अवधारणा से)

↓

नई सोच की प्रक्रिया

(नई अवधारणा)

↓

पुनर्रचना/नई अभिव्यक्ति

सृजनात्मकता की प्रक्रिया

सुनना-बोलना

सुनने और बोलने के कौशल में दक्षता से आमतौर पर हम यही चाहते रहें हैं कि बच्चे पढ़े और सुने को ज्यों का त्यों बोल दें। सुनने और बोलने में समझ की भूमिका को हम भूलते चले गये। जबकि किसी बात पर प्रतिक्रिया न करने वाले (न सुनने वाले के अर्थ में) को हम यही कहते हैं–'अरे भई तुम सुन ही नहीं रहे हो' जाहिर है कि यहाँ समझ के बिना सुनने का और बोलने का कोई मतलब नही लिया जा रहा है। पर हम पढ़ने-पढ़ाने कि दुनिया में सुनने और बोलने के कौशल में समझ की इस अहम भूमिका को भूलते चले गये।

- किसी के अनुभव, विचारों-इरादों को सुनकर, पढ़कर, समझकर अपनी प्रतिक्रिया दे सकते हैं।
- अपने विचारों को व्यवस्थित ढंग से अभिव्यक्त कर पाते हैं।
- समूह में अपनी बात कहने का साहस जुटाते हैं और सशक्त रूप से अपनी बात कह सकते हैं।
- अपने अनुभव संसार और भाषा संसार के साथ-साथ नए अनुभव और नए भाषा प्रयोग के प्रति उत्सुक रहते हैं।
- संदर्भ, परिस्थिति और अवसर के अनुसार अपने को अभिव्यक्त कर सकते हैं।
- सहजता और स्पष्टता से अपनी बात कह पाते हैं।

कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे?

विद्यार्थियों में विविध भाषायी लहजों, भाषा के क्षेत्रीय उच्चारण, प्रयोगों की संभावना होती है। इन प्रयोगों को टोककर कहीं विद्यार्थियों को निरूत्साहित तो नहीं कर रहे?

हर बच्चे एक से प्रवाह के साथ अपनी बात नहीं कह पाते। कहीं हम रुक-रुक कर या हकलाकर बोलने वाले को प्रवाह में बोलने को विवश तो नहीं कर रहे?

लेखन

लिखना एक सार्थक गतिविधि तभी बन पाएगी जबकि बच्चों को अपनी भाषा, अपनी कल्पना, अपनी दृष्टि से लिखने की आज़ादी मिले। बच्चों को ऐसे अवसर मिलें कि वे अपनी भाषा और शैली विकसित कर सकें न कि ब्लैकबोर्ड पर लिखे या किताबों की इबारत या फिर अध्यापक के लिखे हुए की नकल करते रहें। आकलन करते समय हम देखेंगे कि–

- लिखने में नए शब्द इस्तेमाल किए हैं या नहीं।
- लिखने व बोलने में अपने आस-पास/स्थानीय सुनी-समझी या पढ़ी हुई भाषा का सृजनात्मक ढंग से इस्तेमाल कर पाते हैं।
- लेखन में तार्किकता है—चाहे कल्पनापरक हो या फिर तथ्यपरक।
- कल्पनाशीलता का पोषण कर पा रहे हैं।
- लेखन में सार्थक वाक्यों का समूह नज़र आए यानी की वाक्यों की परस्पर सम्बद्धता झलके।
- डायरी, संस्मरण, रेखाचित्र, वृत्तांत आदि प्रकार के लेखनों में अवलोकन क्षमता का बखूबी इस्तेमाल कर पा रहे हैं।
- लेखन की स्पष्टता के लिए प्रारूप का इस्तेमाल कर पा रहे हैं।

कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे?

- बच्चे के लेखन को मूल्यांकित करते समय कथ्य की बजाय भाषा के ऊपरी ढाँचे को अधिक तरज़ीह तो नहीं दे रहे?
- रचनात्मक लेखन में विषयवस्तु की प्रस्तुति कैसे की गई है यह महत्वपूर्ण है, न कि स्वयं में विषयवस्तु इसलिए कहीं बच्चों के विचारों को अस्वीकार तो नहीं कर रहे?

इस बात को समझने के लिए नीचे दिए गए अध्यापक के अनुभव पढ़ें।

- क्षेत्रीय शब्दों के इस्तेमाल को लेखन में बाधा तो नहीं मान रहे हैं?
- रचनात्मक लेखन में मानकता के निर्वाह की अपेक्षा तो नहीं कर रहे?
- भाषा के विभिन्न रजिस्टर की समझ के उद्देश्यों तक पहुँचने के लिए पाठ्यसामग्री अलग-अलग विधाओं में रखे जाते हैं, मुद्दों के साथ-साथ हर पाठ का एक विशिष्ट उद्देश्य भी होता है, जैसे—स्त्री विमर्श, पर्यावरण सजगता, परिवेशीय संवेदनशीलता, शारीरिक श्रम की महत्ता, वैज्ञानिक तत्परता।

हमें देखना होगा कि कहीं हम पाठ के इन विशिष्ट उद्देश्यों की अवहेलना तो नहीं कर रहे?

अध्यापक के अनुभव

आपने शायद यशपाल की कहानी 'निरापद' पढ़ी होगी। न पढ़ी हो तो सार इस प्रकार है–

सूरज गाँव से शहर आता है। दो-एक दिन मित्र के पास रहता है, पर काम नहीं मिलता। शहरी असर था कि मित्र ने मित्रता छोड़ आश्रय देने में असमर्थता दिखाई। वह एक पार्क में जाकर सो गया, जिस कारण जेल पहुँच गया। अपने अच्छे व्यवहार व कर्मठता के कारण सज़ा माफ हुई और जेल से बाहर आ गया। आते समय कुछ मज़दूरी मिली। बाहर कोई काम न मिला। कारण था कि वह जेल से आया था। थका-हारा रेलवे-स्टेशन पर आकर थोड़ा आराम कर रहा था कि उसने देखा कि पास बैठे बुजुर्ग का बटुआ गिर गया है। वह उसे उठाकर इसी उधेड़बुन में था कि उन तक कैसे पहुँचाए, तभी वह बुजुर्ग एक सिपाही को लेकर आया और बोला कि हाँ, यही है मेरा बटुआ...। सिपाही उसे दारोगा के सामने ले आया। पहले तो सूरज ने समझाने की कोशिश की कि उसने चोरी नहीं की परंतु तभी उसे जेल जाने का ख्याल आया कि वहाँ पर खाना, रहना, काम सभी मिलेगा तो वह चोरी कबूलने लगा लेकिन दारोगा समझ गया था वह निरापद है अत: उसे छोड़ दिया।

अब बच्चों से पूछा गया कि सूरज की तरह आप दो दिन से भूखे हो और तुम्हें पैसों से भरा बटुआ मिलता है तो आप क्या करेंगे?

- कुछ बच्चों का जवाब था कि हम मालिक को ढूँढ़कर लौटा देंगे।
- कुछ बच्चों ने कहा कि हम उसे हर संभव प्रयास द्वारा ढूँढ़कर बटुआ लौटाएंगे और उससे कुछ काम मांगेंगे।
- कुछ बच्चों ने कहा कि मैं दो दिन से भूखा हूँ अत: सबसे पहले किसी रेस्तरां में बैठकर खाना खाऊंगा और फिर मालिक को ढूंढ़ने का प्रयास करूंगा।

मुझे यह उत्तर कतई पसंद नहीं आया। रह-रहकर ख्याल आया कि बच्चों की सोच कैसी हो गई है, ठीक दृष्टि से सोच नहीं सकते। और मैंने इस उत्तर को पूर्ण रूप से खारिज कर दिया और बच्चे को एक अंक भी नहीं दिया।

अगले वर्षों में ऐसे बच्चों की संख्या बढ़ती गई तब मुझे यह सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि बच्चे गलत

भाग 2

भाषा-समझ को जानें पाठ के ज़रिए

मूल्यांकन के इन संकेत बिंदुओं को हम कुछ पाठों के ज़रिए समझने की कोशिश करते हैं। यहाँ जो भी गतिविधियों ही जा रही है उन्हें ज्यों-का-त्यों करने-करवाने की बजाय अध्यापक अपनी समझ और समय सीमा को ध्यान में रखते हुए पूरे साल के अनुसार इन्हें विभाजित कर सकते हैं। किसी अन्य पाठ के संदर्भ में इन गतिविधियों को किया जा सकता है। तीनों पाठों से संबंधित गतिविधियों की प्रस्तुति भी अलग तरह से की गई है। पहली प्रस्तुति एक कक्षा-अनुभव तो दूसरी और तीसरी कुछ सुझावात्मक योजनाओं के रूप में लिखी गई है।

पाठ–जहाँ पहिया है (वसंत, कक्षा-8)

भाषा में आकलन के प्रति एक ठोस समझ बनाने के लिए यहाँ राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा **कक्षा-8** के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक **'वसंत'** के एक पाठ **'जहाँ पहिया है'** का उदाहरण प्रस्तुत है–

अध्यापिका–किसी भी पाठ के आकलन के संदर्भ मे मेरा यह मानना है कि मैं उसे पढ़ाने के साथ-साथ ही लेकर चलूँगी। ऐसा नहीं कि पहले कक्षा में पाठ को पढ़ा दिया फिर उसके सदंर्भ में आकलन व मूल्यांकन संबंधी गतिविधियाँ करवाई। पाठ के संदर्भ में पठन, लेखन और पाठ के प्रति समझ बनाने से जुड़ी सभी गतिविधियों की योजना साथ-साथ चलती रहे।

इस संबंध में कक्षा-8 की पाठ्यपुस्तक 'वसंत' का 'जहाँ पहिया है' प्रस्तुत है–

सबसे पहले पाठ के प्रति अपनी समझ बनाने के बाद मैं पाठ के **उद्देश्य** तय करती हूँ कि आख़िर पाठ किन बातों की ओर संकेत कर रहा है और इस पाठ के ज़रिए मुझे विद्यार्थियों को कहाँ तक ले जाना है। **पहला उद्देश्य** तो यही है कि विद्यार्थी पाठ को **अच्छी तरह से पढ़ लें।** यहाँ 'पढ़ ले' से यह तात्पर्य नहीं है कि विद्यार्थी पाठ के शब्दों को अपनी आवाज में उच्चरित करें बल्कि वे उसके प्रति अपनी समझ बनाएं। ऐसा मैं इसलिए कह रही हूँ कि मैंने अपने कई साथी अध्यापकों को देखा है कि वे हरेक पाठ को टुकड़े-टुकड़े कर कई विद्यार्थियों से बुलवाते हैं। इस तरह से बुलवाने के प्रति उनका तर्क यह होता है कि वे विद्यार्थियों में पठन क्षमता का विकास कर रहे हैं, उनका यह भी कहना है कि इस तरह से पाठ को पढ़वाकर वे प्रत्येक विद्यार्थी की पठन क्षमता का आकलन भी करते जा रहे हैं जैसे कि कौन विद्यार्थी अटक-अटक कर पढ़ रही है, कौन प्रवाह के साथ पढ़ रही है आदि आदि। इस मामले मे मैं अपने साथियों से मतभेद रखती हूँ। मेरे विचार में किसी भी पाठ को अलग-अलग अनुच्छेदों में बाँटकर, उन अनुच्छेदों को अलग-अलग विद्यार्थियों से पढ़वाना मात्र (खड़े होकर ऊँची आवाज़ में) न तो पठन क्षमता का विकास करना है और न ही पठन क्षमता का आकलन करना है। मैं पाठ को संपूर्णता मे पढ़ने की गतिविधियाँ करूँगी। जैसे पाठ को अपने आप पढ़कर अपनी भाषा मे समझाना।

'जहाँ पहिया है' के सदंर्भ में **दूसरा उद्देश्य रचनात्मक लेखन** की ओर विद्यार्थियों को ले जाना है। **तीसरा उद्देश्य भाषा के भिन्न-भिन्न रजिस्टरों में से** किन्हीं दो रजिस्टरों जैसे–**समाचार लेखन और विज्ञापन** का परिचय देना है। **चौथा उद्देश्य महिला सशक्तीकरण** से जुड़े प्रयासों के प्रति जागरूकता पैदा करना है।

जैसा कि मैने पहले ही कहा था कि पाठ के संदर्भ में मेरी पहली गतिविधि होगी पाठ को स्वयं पढ़कर उसके प्रति एक समझ बनाना, इस प्रक्रिया में मैं पाठ के अन्त में दिए गए सवालों और अभ्यासों का भी अवलोकन कर रही हूँ। मुझे यह तय करना होगा कि पाठ के अन्त में दी गई गतिविधियाँ और सवाल मेरे द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को विद्यार्थी

द्वारा प्राप्त कर लेने की दिशा में काफ़ी होगें या नहीं। यदि नहीं तो मैं अपनी ओर से भी कुछ सवाल व अभ्यास भी बनाऊँगीं।

मेरी अपनी समझ बनने के बाद अब पाठ कक्षा में विद्यार्थियों के बीच है–विद्यार्थियों के छोटे-छोटे समूह (छह या सात विद्यार्थियों का एक समूह) बनाएँ हैं। सभी के पास पुस्तक है, उन्हें 'जहाँ पहिया है' पाठ पढ़ने को कह दिया गया है। इसके लिए एक समय सीमा भी तय की गई है। उन्हें बताया गया कि वे–

- बेहतर होगा कि मौन पठन करें, जिन विद्यार्थियों को बोलकर पढ़ने की आदत हैं, उन्हें इस बात की छूट मिलनी चाहिए।
- आवश्यकतानुसार आपस में चर्चा करें।
- कोई बात समझ में न आने पर एक दूसरे से पूछने की छूट है।
- स्वयं पढ़कर एक-दूसरे के साथ चर्चा करें कि पाठ में कौन-कौन से मुख्य बिंदु उभर कर आए हैं।

जब विद्यार्थी समूह में पाठ पढ़ रहे हैं तो ये न समझें कि मेरी भूमिका समाप्त हो चुकी है, मैं प्रत्येक समूह के पास जा रही हूँ, कुछेक देर उनके पास बैठ रही हूँ, जो विद्यार्थी बोलकर पढ़ रहे हैं उनके उच्चारण पर भी ध्यान दे रही हूँ, जो मौन पठन कर रहे हैं उनसे सवाल पूछकर जानने की कोशिश कर रही हूँ कि वास्तव में पाठ पढ़ रहे हैं या केवल नज़रे पाठ पर है और कल्पना के घोड़े कहीं और दौड़ा रहे है।

जब समूह में पठन का काम समाप्त हो जाए तो सभी समूहों को कहूँगी कि एक-एक कर वे बताएँ कि पाठ के किन बिंदुओं की ओर उनका ध्यान गया है। यह सब उन्हें मौखिक रूप से बताना होगा। इसके लिए आप प्रत्येक विद्यार्थी से भी कह सकती है कि वे सब अपनी-अपनी बात कहें या फिर समूह में से कोई दो विद्यार्थी। समूह कार्य की प्रकृति के अनुसार तो दूसरी स्थिति ही सही है। संभवतया मुझसे कोई ये कहे कि इस तरह तो प्रत्येक समूह से केवल दो-दो विद्यार्थियों का ही आकलन कर पाएंगे तो मेरा तो यही तर्क होगा कि पूरे अकादमिक सत्र में कई सामूहिक गतिविधियाँ आयोजित होगी यदि मैनें 'जहाँ पहिया है' के सामूहिक पठन वाले कार्यकलाप में सुरभि व तनुश्री के आकलन संबंधी टीपें दर्ज़ की हैं तो अगली सामूहिक गतिविधि में किन्हीं और विद्यार्थियों की।

यह तो निश्चित ही है कि एक कालांश में सभी विद्यार्थियों की समझ आधारित पठन क्षमता संबंधी टीपें दर्ज़ करना मुश्किल ही नहीं असंभव है और जो अध्यापक ऐसा कर पाते है मुझे उनकी टीपों पर संदेह होगा। जो विद्यार्थी अपनी-अपनी बात रख रहे हैं, मेरे साथ-साथ कक्षा के बाकी विद्यार्थी भी ध्यान से सुन रहे है (ऐसी स्थिति मुझे बनानी होगी) मेरे पास सभी विद्यार्थियों के नाम दर्ज़ है। मैंने विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति को सिर्फ सुना ही नहीं बल्कि आकलन बिंदुओं के आधार पर उनके लिए टीपें भी दर्ज़ की हैं, जैसे–

अरूणिमा–पूरे समय ध्यान पुस्तक पर ही था। देखने से लगा कि शायद उसे समझने में असुविधा हो रही है परन्तु उसकी मौखिक अभिव्यक्ति बहुत सशक्त थी–

- उसने अपनी बात कहने के लिए पाठ से इतर शब्दों का सहारा लिया,
- कहीं-कहीं पर मुहावरे का भी प्रयोग किया जो कही गई बात को पुख़्ता कर रहे थे,
- पिछली बार की तुलना में इस बार प्रदर्शन अच्छा था क्योंकि पिछले समूह कार्य में वह अपनी बात कहने में हिचकिचा रही थी।

पश्यन्ती–पठन के समय बीच-बीच में कुछ शब्दों को बुदबुदा रही थी और अपने साथी से उन शब्दों पर कुछ बातचीत भी कर रही थी।

- किसी शब्द का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश की माँग की।
- पढ़ते-पढ़ते कुछ बिंदुओं को पेंसिल से लिख रही थी और अपने लिखे गए को भी बुदबुदा रही थी।
- पूरे समूह का पठन रोककर सभी को पाठ का कोई बिंदु दिखाकर उस पर मशविरा कर रही थी।
- मौखिक अभिव्यक्ति के समय उसने यही कहा कि वह पाठ को समझ तो पाई है पर अभी पूरी बात कह नही पा रही है। केवल एक ही वाक्य बोला कि पाठ महिला जीवन में क्रान्ति लाने की बात कह रहा है।

इस तरह मैं हर समूह से दो-दो विद्यार्थियों के बारे में टीपें ज़रूर दर्ज़ कर रही हूँ जो मुझे उनकी समझ आधारित पठन क्षमता को जानने में मदद कर रहे हैं।

अरूणिमा के बारे में मैंने जो टीपें दर्ज़ की हैं वे मुझे रास्ता दिखाती हैं कि उसके साथ मुझे आगामी कक्षाओं में क्या और करना है। एक ख्याल तो आता है कि उसके साथ कुछ विशेष करने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि उसने तयशुदा उद्देश्यों एवं अपेक्षा से कही अधिक अच्छा प्रदर्शन किया पर ऐसा करना उचित जान नहीं पड़ा मैंने तय किया कि मैं अरूणिमा को–

- 'पहिया' के इर्द–गिर्द कुछ रचनात्मक बुनावट प्रस्तुत करने के लिए कहूँगी।
- महिला जागृति से जुड़े कुछ और लेख व समाचार पढ़ने के लिए दूँगी।

इसी तरह से पश्यन्ती के बारे में भी मुझे कुछ अलग से करने की ज़रूरत नहीं महसूस हुई। मुझे लगा कि वह समूची कक्षा में समूह चर्चा का बखूबी आयोजन व संचालन कर सकती है तो क्यों न उसे इस पाठ की प्रकृति से मिलता–जुलता समाचार या लेख लाने के लिए कहा जाए और उस पर समूह चर्चा आयोजित करने का काम दिया जाए। जिस तरह का समाचार या लेख या कोई भी प्रसंग वह लेकर आएगी उससे मुझे यह तय करने में सुविधा होगी कि पश्यन्ती 'जहाँ पहिया है' के भाव को समझ पाई है या नहीं। इसी तरह जब वह प्रत्येक समूह के विचार बिंदु सुनकर अपनी टिप्पणी देगी। तब भी मैं पश्यन्ती के पठन कौशल का आकलन कर पाऊँगी क्योंकि उसकी टिप्पणियाँ पाठ के इर्द–गिर्द ही होगी। इन दोनों के ही विपरीत स्थिति में मुझे यह निष्कर्ष निकालना होगा कि अभी पश्यन्ती को पठन हेतु और अधिक समय देना है।

इस गतिविधि में मैंने प्रत्येक समूह से दो–दो विद्यार्थियों के बारे में टीपें दर्ज़ की। मैं ऐसा भी कर सकती थी कि विद्यार्थी विशेष के बारे में कुछ न कहकर पूरे समूह के बारे में लिखती जैसे कि–

"समूह न.–1 ने अपना काम समय पर पूरा किया, सभी विद्यार्थियों ने चर्चा में बराबर का हिस्सा लिया। समूह में सभी एक–दूसरे की बात सुन रहे थे। इस समूह ने पाठ का जो सार प्रस्तुत किया उससे लगता है वे पाठ का मूल भाव नहीं पकड़ पाए हैं।"

हर समूह के बारे में टिप्पणी देकर मेरा काम आसान हो जाता। फिर भी मैनें इससे बचना चाहा क्योंकि मैं चाहती हूँ कि मुझे विद्यार्थी विशेष की प्रगति व कौशल का पता चले तभी मैं तय कर पाऊँगी कि मुझे किसके साथ क्या करना होगा।

पठन कौशल को लेकर मेरे प्रयास यही खत्म नहीं हो जाते, मैं एक और गतिविधि करवा रही हूँ। हो सकता है कि मुझे इसके अतिरिक्त भी कुछ करवाना पड़े। दरअसल बात यह है कि हर विद्यार्थी के अपने–अपने तरीके होते हैं किसी बात को सीखने व सीखी हुई बात को अभिव्यक्त करने के लिए। मेरी अगली गतिविधि भी समूह में ही है। मैंने समूहों को बदला नहीं है। अब उन्हें मैंने पूरे पाठ के आधार पर सवाल बनाने के लिए कहा है, ऐसे सवाल जो पाठ को खोलने का काम करें, ऐसे सवाल जो भाषागत ज्ञान की परख कर सके।

अब जो मैं टीपें दर्ज़ करूँगी वे विद्यार्थी विशेष के लिए न होकर समूह विशेष के लिए होगी जैसे–

- **समूह न.–1** ने अपना काम समय सीमा में पूरा किया। उन्होंनें समूचे पाठ से कुल 14 प्रश्न बनाए। प्रश्नों की भाषा बहुत सरल थी। वे सीधी बयानगी की अपेक्षा रखने वाले प्रश्न थे। हर प्रश्न का उत्तर सीधे–सीधे पाठ मे से पढ़कर ज्यों का त्यों दिया जा सकता था।
- **समूह न.–2** ने अपना काम समय सीमा में पूरा किया। उन्होंनें कुल 8 प्रश्न बनाए। प्रश्न बताने से पहले उन्होंने एक वर्गीकरण प्रस्तुत किया, जैसे–पाठ का विस्तार, पाठ के परे, पाठ के भीतर, भाषा के इर्द–गिर्द। इन चारों श्रेणियों में उन्होंनें दो–दो प्रश्न बनाएँ। प्रश्नों की भाषा सरल व ग्राह्य थी, हाँ, वाक्य कहीं–कहीं लंबे हो गए थे।

प्रश्नों की प्रकृति कुछ इस तरह की थी कि उनका उत्तर देने के लिए पाठ के आगे जाकर बहुत कुछ सोच विचार करने की ज़रूरत थी।

इसी तरह से मैं हर समूह के बारे में अपने अवलोकन बिंदु लिखूँगी। ये बिंदु मुझे सुझाएगें कि मुझे हर समूह के साथ–साथ क्या करना है। जैसे कि समूह न.–1 और 2 के बारे में जो मैंने टिप्पणियाँ दी हैं, आप मुझसे सवाल कर सकते हैं कि मैं उनके साथ आगे क्या करने वाली हूँ। मुझे लगता है कि समूह न.–1 के साथ बैठकर मैं उन्हें कह सकती हूँ कि एक बार पाठ को फिर से पढ़ें और फिर अपने प्रश्नों पर नज़र डालें। उनसे यह भी कहूँगी कि एक बार पाठ के अंत में दिए गए प्रश्न अभ्यासों को भी पढ़ें, वे किसी न किसी रूप में पाठ को समझने में मदद करेंगे।

1.

समाचार लेखन

मान लीजिए आप एक संवाददाता हैं। आपको 8 मार्च 1992 के दिन पुडुकोट्टई में हुई घटना का समाचार तैयार करना है। पाठ में दी गई सूचनाओं और अपनी कल्पना के आधार पर एक समाचार तैयार कीजिए।

पुडुकोट्टई : आज, 8 मार्च, 1992 को, यहाँ पुडुकोट्टई में तूफ़ान-सा आ गया है। पर यह कुछ अलग ही तरह का तूफ़ान प्रतीत होता है। आज सुबह, हैंडलबार पर झंडा लिए 1500 साइकिल-सवार महिलाओं ने यहाँ के रहने वालों को क्या, हमें भी हक्का-बक्का कर दिया है। कुछ गहराई से देखने तथा यहाँ की कुछ महिलाओं से बातचीत करने पर इस महा-साइकिल आंदोलन के कई कारण उभरते हैं। फातिमा, जो कि एक माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिका हैं, का कहना है– "साइकिल चलाने में एक खास तरह की आज़ादी है। हमें किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।" हमारे समाज में महिलाओं को उनके जीवन में ~~वह~~ कहीं न कहीं अपनी ~~कुछ~~ आज़ादी की कुछ कमी महसूस होती है। आज़ादी के अपने इस अधिकार को पाने के लिए ही पुडुकोट्टई की इन महिलाओं ने आज के दिन साइकिल को अपना हथियार बनाया है। पिछले कुछ समय से ही यहाँ की सभी महिलाएँ धीरे-धीरे साइकिल चलाना सीख रही हैं। खेतिहर मज़दूर महिलाओं, गाँव की नर्सों से लेकर स्कूल की अध्यापिकाओं तक, सभी ने साइकिल चलाना सीख लिया है। पर साइकिल चलाना सीखने वालों में सबसे अधिक संख्या नवसाक्षर महिलाओं की है। ये नवसाक्षर महिलाएँ अत्यंत जोश के साथ स्वयं भी साइकिल चलाना सीखती हैं तथा फिर दूसरों को भी सिखाती हैं। सभी ओर आनंद व खुशी का माहौल नज़र आता है। ~~परंतु,~~

परंतु, साइकिल आंदोलन की एक अगुआ से बात करने पर हमें पता चला कि यह सफ़र इतना आसान न था। हमें बताया गया कि जब महिलाओं ने साइकिल चलाना शुरू किया तो लोग उनका मज़ाक बनाते थे तथा कई पुरुष इसका विरोध भी करते थे। इसका कारण था कि चूँकि साइकिल चलाने से महिलाओं की पुरुषों पर निर्भरता कम हो गई है, इसलिए समाज में पुरुषों का वर्चस्व कम होने की संभावना है। इस कारण इसका विरोध होता था। पर अब धीरे-धीरे महिलाओं के साइकिल चलाने को सामाजिक स्वीकृति मिल रही है। इस प्रकार संघर्ष कर जीतने से सभी महिलाओं का आत्मविश्वास, आज आसमान की बुलंदियों को छू रहा है।

साइकिल से कई महिलाओं को आर्थिक सहायता भी मिलती है। उन्हें व्यापार के लिए बस यात्रा पर निर्भर नहीं करना पड़ता। इसलिए वे मनचाहे समय पर अलग-अलग गाँवों में व्यापार करने साइकिल से जा सकती हैं। इससे समय की बचत होती है तथा वे घर के कामों में भी पर्याप्त समय बिता सकती हैं। उन्हें आराम करने के लिए भी अधिक समय मिल जाता है। पर इन महिलाओं का साइकिल चलाने का लक्ष्य आर्थिक सहायता नहीं है। कई महिलाएँ तो रोज़ शाम किराए पर साइकिल लेकर चलाती हैं क्योंकि उनकी नई साइकिल खरीदने की हैसियत नहीं है परंतु वे भी उस आज़ादी का अनुभव करना चाहती हैं। जैसा कि यहीं की एक महिला ने हमें बताया – "लोगों के लिए यह समझना बड़ा कठिन है कि ग्रामीण महिलाओं के लिए यह कितनी बड़ी चीज़ है। उनके लिए तो यह हवाई जहाज़ उड़ाने जैसी बड़ी उपलब्धि है। लोग इस पर हँस सकते हैं लेकिन केवल यहाँ की औरतें ही समझ सकती हैं कि उनके लिए यह कितना महत्त्वपूर्ण है।" सच में, पुडुकोट्टई की महिलाओं का यह अद्भुत हथियार और उसके इस्तेमाल से उनका उल्लास शायद ~~हम सभी की~~ लंबे समय तक हम सभी की दृष्टि से ओझल ही रहेगा।

2.

समाचार

[illegible]

3.

समाचार

साइकिल से मिली महिलाओं को आज़ादी

[illegible]

इस पाठ से संबंधित लेखन की और कई गतिविधियाँ भी मैंने सोची। एक गतिविधि समाचार लेखन संबंधी कक्षा में किया गया। बच्चों के लिए समाचारों का आकलन करते समय किसी ग्रेड या अंक की बजाय उसे पोर्टफोलियो में रखकर अपने किए कामों का स्वयं आकलन करने को कहा तो यह मज़ेदार गतिविधि तो बनी ही लेखन संबंधी ज़रूरी विशेषताएँ, जैसे–समाचार की शैली, भाषा, शब्दों के प्रयोग और कल्पना पर बच्चों ने खुद ही तर्कसम्मत सुझाव प्रस्तुत किए।

मेरी कोशिश यह भी हो सकती है कि मैं उनके साथ बैठकर एक अनुच्छेद पढ़ूँ और उसी पर एक सवाल बनाकर दिखाऊँ। समूह में बैठकर मैं विद्यार्थी विशेष की व्यक्तिगत कमी का भी पता लगा सकती हूँ।

इस पाठ से संबंधित गतिविधि करवाते हुए एक अन्य अध्यापिका ने किस तरह आकलन प्रस्तुत किया है, इसे देखें और सोचें कि यह पठन कौशल को विकसित कर सकने और उसका आकलन करने में कितना सहायक है?

उदाहरण प्रस्तुत है–

इस पाठ को पढ़ाते समय 8 समूहों में बाँटा गया। प्रत्येक समूह में पाँच विद्यार्थी थे। अतः पाठ को पाँच भागों में बाँटा गया। प्रत्येक समूह के पहले विद्यार्थी को पहला हिस्सा और दूसरे विद्यार्थी को दूसरा हिस्सा, तीसरे को तीसरा, चौथे को चौथा और पाँचवे विद्यार्थी को पाँचवा हिस्सा मौन पठन के लिए दिया गया। दस मिनट के बाद सभी समूहों के पहले छात्र एक साथ बैठे और अपनी-अपनी तरह से पाठ के पहले हिस्से को लेकर चर्चा की और मिलकर अपनी समझ को उस हिस्से पर व्यापक बनाया। अपनी शंकाओं को अपने मित्रों से भी साँझा किया। इसी तरह अन्य हिस्सों पर भी सभी विद्यार्थियों ने चर्चा की।

अब सभी विद्यार्थी अपने पहले वाले ग्रुप (होमरूम ग्रुप) में लौट आए। अब अपने-अपने हिस्से की समझ/पकड़ मजबूत बन चुकी थी अतः अपने-अपने हिस्से को सबने साँझा किया और पाठ को पूरी तरह समझा।

अगली कक्षा में प्रत्येक समूह ने पाठ को जैसे समझा था वैसे प्रस्तुत किया। पहले हिस्से को समझने वालों ने प्रस्तुति में अपने साथी को सहयोग दिया। अन्य विद्यार्थियों को कहीं शंका थी तो उन्होंने बीच-बीच में प्रश्न किए और अपनी समझ को विस्तार दिया। इसी प्रकार से पूरे पाठ के सभी हिस्सों की प्रस्तुति हुई। जहाँ जरूरत लगी, मैंने भी अपनी टिप्पणी जोड़ी।

प्रस्तुति के समय मेरे आकलन का ढ़ंग कुछ इस प्रकार रहा–

विद्यार्थी का नाम	*समझ कितनी बनी*			*प्रस्तुति में अपनी भाषा का प्रयोग*			*आत्मविश्वास कितना था*		
	पाठ से भी आगे की समझ थी पाठ को और चीजों से भी जोड़ पाया	अच्छी समझ तो थी पर आगे नहीं बढ़ गया	समझ बनने में कुछ कमी रह गई	पूरे अधिकार से भाषा का प्रयोग करने में सक्षम	पुस्तकीय भाषा का ही प्रयोग था एकाध स्थान छोड़कर	समझ तो रही थी पर कह पाने में कठिनाई आ रही थी	पूरी तरह से	ठीक-ठाक था	घबराहट थी
प्राची	√				√			√	
प्रत्यूष	√			√				√	
निशा			√				√		√

सुधार के प्रयास

प्राची– *प्राची को अतिरिक्त अध्ययन का सुझाव दिया गया ताकि उसका शब्द भंडार विकसित हो सके।*

प्रत्यूष– *अच्छे प्रयास की सराहना की गई और स्त्रियों की इस प्रकार और पहलों को ढूँढ़कर लाने को कहा ताकि अन्य विद्यार्थियों के साथ अपनी जानकारी बाँट सके।*

निशा– *निशा की जितनी समझ थी उसकी सराहना की और पाठ के मुख्य बिंदु फिर से स्पष्ट किए तथा उसे अखबार से स्त्री शक्ति की खबरें काटकर लाने को कहा। (कक्षा में वह खबरें पढ़ेगी तो उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा। शब्द भंडार/भाषा तथा समझ का भी विकास होगा।)*

(इस प्रकार थोड़े बदलाव के साथ कार्य करवाया गया।)

शिक्षक यदि वर्ष में दो बार बच्चे के विकसित भाषायी ज्ञान के बारे में अपने अवलोकन प्रस्तुत करें तो भी उसका यह मूल्यांकन बच्चे के लिए उपयोगी होगा।)

दी गई गतिविधियों को करवाते समय आपके, मेरे सामने बहुत से सवाल खड़े हो सकते हैं, हर सवाल अपने आप में महत्वपूर्ण है, ये सवाल प्रशासन और अध्यापकीय विवेक की माँग करते हैं।

प्रशासन तथा अध्यापक के लिए चुनौती

- यह ज़रूरी नहीं कि सभी विद्यार्थी सारी की सारी गतिविधियाँ करें। हम विद्यार्थियों के समूह बनाकर गतिविधियों का बंटवारा कर सकते हैं। संभवतया यह सवाल उठे कि हर गतिविधि की प्रकृति और उद्देश्य भिन्न-भिन्न हैं तो ऐसे में कुछ विद्यार्थियों के आकलन का आधार अलग होगा और कुछ के लिए अलग तो यह तर्कसम्भव है?

मिसाल के तौर पर एक समूह शब्दकोश आधारित गतिविधि में संलग्न है, दूसरा समूह बुलेटिन बोर्ड पर काम कर रहा है, दोनों समूहों के आकलन के आधार फर्क-फर्क हैं। ऐसी स्थिति में प्रशासन को यह छूट देनी होगी कि पहले समूह को आने वाले समय में किसी और पाठ के संदर्भ में बुलेटिन बोर्ड आधारित गतिविधि दी जा सकती है। कोशिश तो की ही जा सकती है न। आखिर हमारा सरोकार तो इस बात से है न सीखने का रस कहीं खो न जाए।

- पाठ्यक्रम में सिर्फ पाठ्यपुस्तक के पाठ ही नहीं, और भी बहुत कुछ करवाने के लिए है, अगर इतना समय एक ही पाठ को दिया गया तो शेष कामों का क्या होगा?
- जिस तरह से सामूहिक गतिविधि आयोजित की गई, इसके लिए एक सत्र तो पर्याप्त नहीं है।
- कक्षा में फर्नीचर की व्यवस्था कुछ इस तरह की है कि समूह कार्य तो करवाया ही नहीं जा सकता कहीं-कहीं तो फर्नीचर इतना भारी है कि उसे इधर-उधर किया नहीं जा सकता और कहीं-कहीं उसे आपस में बाँध दिया जाता है। इस भय से कि दूसरी कक्षाओं के बच्चे फर्नीचर ले न जाएँ।
- समूह के गठन को लेकर भी सवाल हो सकते हैं कि जिन बच्चों की पकड़ पठन या लेखन को लेकर कमजोर है उनका क्या किया जाए, जो बच्चे बोलना ही नहीं चाहते, चर्चा में भाग नहीं लेना चाहते, उनके साथ क्या किया जाए।

इन सवालों की जकड़बंदी में दी गई गतिविधियाँ करवाते समय अध्यापक उलझे थे पर उन्होंने बताया कि अपने साथियों के साथ बातचीत करके हल निकाला। एक-एक कर समाधान मेरे सामने आते गए। उन सभी को लगा कि उनके विद्यार्थियों को उनके किसी प्रयास से लाभ पहुँचा। स्कूल प्रशासन को कई स्थितियों में लचीलापन-बैठने की व्यवस्था, सत्र का समय, गतिविधि करने की स्वतंत्रता।

पाठ–अपूर्व अनुभव (वसंत, कक्षा-7)

बच्चों के साथ मिलकर जब हम पाठ के साथ अन्तःक्रिया कर रहे हैं तो समझिए कि आकलन की प्रक्रिया भी साथ-साथ चल रही है, कुछ इस तरह से कि पाठ का मज़ा बरकरार रहे। पठन से मिलने वाला मज़ा/आनन्द आकलन के घेरे में कहीं कैद न हो जाए, इस बात को मद्देनज़र रखते हुए 'अपूर्व अनुभव' के लिए पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियों से इतर कुछ गतिविधियाँ दी जा रही हैं।

'अपूर्व अनुभव'–

1. अपना-अपना स्वभाव

पूरे विद्यालय में मात्र तोत्तोचान ही ऐसी विद्यार्थी थी जिसने यासुकी चान को अपने पेड़ पर चढ़ने का मौका दिया।

- यासुकी चान के और दूसरे साथी ऐसा क्यों नहीं सोच पाए होंगे? इस प्रसंग से तोत्तोचान की जो छवि आपके मन से बन रही है, उसे लिखें।

आकलन के बिंदु

- लेखन में कल्पनाशीलता तथा स्पष्टता।

2. विद्यालय की तस्वीर

'अपूर्व अनुभव' के माध्यम से लेखिका ने अपने विद्यालय का एक अनुभव हमारे साथ साझा किया है। इस अनुभव के आधार पर आप के मन में उस विद्यालय की एक तस्वीर उभरी होगी, उसे लिखें और यह भी बताएं कि वह आपके विद्यालय से कैसे भिन्न हैं?

आकलन के बिंदु

- लेखन–पठन
- अवलोकन
- तुलना करना

3. आप–एक जागरूक विद्यार्थी के रूप में

'यासुकी चान को पोलियो था।'

पोलियो के बारे में जानकारी एकत्रित करें।

आपके विद्यालय या आस-पड़ोस में पोलियो उन्मूलन के लिए लगने वाले शिविर में आप किस तरह से योगदान दे सकते हैं?

आकलन करते समय अध्यापक और प्रशासन के लिए चुनौती

यहाँ पर एक सवाल हमारे लिए भी है, यदि कोई विद्यार्थी लिखे कि मैं किसी तरह का कोई योगदान नहीं देना चाहती क्योंकि मेरे अभिभावक मुझे इस काम की अनुमति नहीं देगें।

- यह तो सरकार की जिम्मेदारी है, मैं क्यों अपना समय और ऊर्जा दूँ?
- इस तरह के शिविर आमतौर पर अवकाश वाले दिन लगते हैं और उस दिन मुझे घर/पिता के साथ हाथ बँटाना होता है।
- एक ही तो छुट्टी का दिन मिलता है उस दिन भी क्या हम काम करें।
- मुझे नहीं समझ आ रहा कि मैं क्या-क्या कर सकती हूँ क्योंकि मैंने कभी ऐसे शिविर देखे नहीं, हाँ पर मैं करना ज़रूर चाहती हूँ।

- हमारा अध्यापकीय विवेक इन उत्तरों के बारे में क्या कह रहा है?
- कहीं हम यह तो अपेक्षा नहीं कर रहे कि बच्चे सिर्फ यही लिखें–

– घर-घर सर्वेक्षण करना
– अभिभावकों को प्रेरित करना
– शिशुओं (लाभार्थियों की सूची बनाना आदि-आदि)

4. समूह चर्चा–बदलाव कैसे-कैसे?

अगर आपके विद्यालय में यासुकीचान जैसी ज़रूरत वाले बच्चे दाखिला लें (हो सकता है कि पहले से ही हों) तो आप किस तरह के बदलाव चाहेंगे–

- विद्यालय परिसर में
- कक्षा कक्ष में
- खेल के मैदान में
- प्रयोगशालाओं में।

आकलन करते समय.....

यह कार्य एकल रूप से लिखने के लिए भी दिया जा सकता है। यहाँ हमारे अध्यापकीय विवेक को यह छूट नहीं है कि 'किसी भी तरह का बदलाव नहीं चाहेंगे' जैसा उत्तर लिखने वाले विद्यार्थी को भी उसके लेखन/वाचन के आधार पर उत्कृष्ट अंक दें क्योंकि इस प्रश्न के आकलन का आधार बच्चे की परिवेशीय सजगता व संवेदनशीलता है।

5. भ्रमण में सभी बच्चों की भागीदारी

आप अपने सहपाठियों के साथ किसी ऐतिहासिक इमारत के भ्रमण पर जा रहे हैं। यासुकी चान को साथ ले जाने के बारे में आपका क्या विचार है? हाँ या न, दोनों स्थितियों में तर्क ज़रूर प्रस्तुत करें।

कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे?

यहाँ यासुकी चान को छोड़कर जाने वाले विद्यार्थी के दमदार तर्कों से आप प्रभावित हैं। ये तर्क उसके अनुभवों से उपजे होंगे। अत: आप उसे उत्कृष्ट श्रेणी में रख रहे हैं। इस पर हमें और फरमाना होगा। हम तो यही चाहेंगे न कि विद्यार्थी विषम परिस्थितियों में भी अपने सभी सहपाठियों के साथ जाएं और एक-दूसरे की ज़रूरतों का ख्याल रखें। कहीं हम तो नहीं सोच रहे कि हम मनोवांछित उत्तर की अपेक्षा करें भले ही हमारा विद्यार्थी झूठ लिखे। शायद हमें प्रश्न के संकेतक यानी कि आकलन के आधार को ध्यान में रखना होगा।

6. आपके अनुभवों की छानबीन

तोत्तोचान ने यासुकी चान को पेड़ पर चढ़ाने वाली बात अपनी माँ से छिपाई।

अगर वह माँ को सच्चाई बता देती तो क्या माँ उसे यासुकी चान को पेड़ पर चढ़ाने की अनुमति दे देती? उनके अनुमति देने या न देने के पीछे क्या कारण/तर्क हो सकते थे?

अपनी माँ के स्वभाव को ध्यान में रखते हुए उत्तर दें।

तोत्तोचान का अपनी माँ से ये बात छिपाना आपको किस सीमा तक जायज लगा? आपके सामने भी ऐसी परिस्थितियाँ आई होंगी, जब आपने अपने माता-पिता से कोई बात छिपाई हो। ऐसी ही कोई एक घटना/प्रसंग लिखें।

यह भी बताएं कि बात छिपाना सही क्यों था? प्रश्न संख्या किसी तरह के नैतिक मूल्य में पगे उत्तर की अपेक्षा पर आधारित नहीं है। बच्चे द्वारा बात छिपाना, उसे अपने तर्क द्वारा सही ठहराना।

बड़ों से झूठ बोलना या कोई बात छिपाना मानवीय मूल्यों के विरूद्ध है पर परिस्थितिवश ऐसा किया और निर्भीकता से उसे स्वीकार भी किया तो यह भी एक *मानवीय मूल्य है*, इस प्रश्न का उत्तर *तर्कक्षमता* का आकलन करना चाहता है।

हमारे सामने ऐसी स्थिति भी आ सकती है जब विद्यार्थी यह लिखे या कहे कि.....

"मैंने अब तक अपने माँ-पिता से कोई बात नहीं छिपाई है।"

हम उसके उत्तर को नकार नहीं सकते पर विकल्प दे सकते हैं–"यदि किसी कारणवश ऐसा करना पड़े तो.....।

7. आपकी दिनचर्या

'अपूर्व अनुभव' संकेत करता है कि तोत्तोचान व यासुकी चान की दिनचर्या में टेलीविजन नहीं था। कल्पना करें कि आपकी दुनिया में भी टेलीविजन नहीं है, आपकी दिनचर्या में क्या फर्क आएगा?

आकलन करते समय...

- यह गतिविधि मौखिक रूप से भी करवाई जा सकती है।
- यदि मौखिक रूप से करवा रहे हैं तो क्या हकलाकर बोलने वाले बच्चे को प्रोत्साहित करेंगे कि वह समूह में खड़े होकर अपनी बात कहे या उसे कहेंगे कि वह अपने विचार लिख कर प्रस्तुत करे। यदि बुलवा रहे हैं तो आपके आकलन के मानदंड क्या होगें?
- देखना यह है कि बच्चों को एक ही गतिविधि न देकर अलग-अलग गतिविधियाँ भी दी जाएं।

8. संस्मरण गद्य साहित्य की एक विधा है। 'अपूर्व अनुभव' आपको भी अपनी स्मृतियों के झरोखों में झाँकने को उत्साहित कर रहा होगा। एक छोटा सा संस्मरण आप भी लिखें।

आकलन बिंदु

- वर्तमान समय से पीछे झाँकना, अस्मृति और अवलोकन को शब्द दे सकना।

पाठ—चाँद से थोड़ी-सी गप्पें (वसंत, कक्षा-6)

पाठ के कुछ विशेष उद्देश्य हो सकते हैं–

- प्रकृति के साथ मानवीय संबंध की पहचान कर पाते हैं।
- शब्दों से खेल/ध्वनि संकेत चिह्नों के प्रयोग से अर्थ सौंदर्य पैदा होते हैं, इसे जान पाते हैं।
- अपने से अलग होकर (छोटे या बड़े के रूप में) अपने आपको देख पाते हैं।
- भाषा-सौंदर्य ध्वनि/आरोह/अवरोह/की शक्ति के प्रयोग कर पाते हैं।
- अपनी कल्पना पूरी प्रकृति को शामिल कर पाते हैं।

पाठ के साथ संवाद की शुरुआत के साथ ही आकलन की प्रक्रिया भी शुरू हो जाती है। कुछ गतिविधियाँ दी जा रही हैं जो अध्यापक अपनी ज़रूरत के अनुसार कक्षा में कर सकते हैं।

अपनी भाषा अपनी कल्पना

- कक्षा में बच्चों से कहा जाएगा कि वे अपनी लोक भाषा में चाँद से जुड़े कुछ लोक गीत, कविताएं सुनाएं। बच्चों द्वारा सुनाए गए गीत, कविताओं आदि में जो समान बिंदु उभरकर आएंगे उन पर कक्षा में चर्चा की जाएगी।
- बच्चों के साथ 'गप्प' पर बातचीत की जाएगी। बातचीत निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित हो सकती है–
  - ❖ प्रकृति में आप किस-किस से गप्प लगाएंगे और क्या गप्प लगाएंगे।
  - ❖ अगर आप सूरज से गप्प लगाएंगे तो आप क्या कहेंगे।
  - ❖ अगर आप चाँद से गप्प करेंगे तो क्या कहेंगे। चाँद आपसे क्या कहेगा।
- साथ ही यह भी स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि भले ही इस कविता में चाँद के साथ गप्पें की गई हैं परंतु यह संवाद एकतरफा ही है। यदि चाँद संवाद करते हुए जवाब देता तो वह क्या जवाब देता। अगर आप संवाद जारी रखते तो चाँद से क्या सवाल करते और चाँद आपसे क्या सवाल पूछता।

आकलन बिंदु

- कल्पनाशीलता

कविता की लय और अर्थ

प्रस्तुत कविता में सीधे-सीधे लय दिखाई नहीं पड़ती लेकिन फिर भी इस कविता में एक लय है। यह कैसे संभव है बातचीत में यह उभारने की कोशिश करें कि कविता की इस लय को समझने के लिए उसे सही उतार चढ़ाव के साथ पढ़ना ज़रूरी है।

शिक्षक स्वयं कविता का उचित विराम ठहराव के साथ भावपूर्ण पाठ करेगा और फिर बच्चों से करवाएगा एक-दूसरे के पढ़ने के तरीके को ध्यान से सुनें और कविता को समझने की कोशिश करें। कविता के अर्थ और पढ़ने में, उतार-चढ़ाव में क्या संबंध है? इस पर चर्चा हो।

आकलन बिंदु

- कविता की लय और अर्थ के संबंध को जानना।

परिवेश और प्रकृति (पाठ के साथ संवाद)

- शिक्षक बच्चों को चाँद के वे मूल छाया चित्र दिखाएँ जो चाँद पर गए व्यक्ति लाए थे। उन पर चर्चा करते हुए पूछें कि आपको चाँद कैसा नज़र आता है? छाया चित्र में दिखाए गए चाँद और आपको नज़र आने वाले चाँद में क्या अंतर है? दोनों तरह के अनुभवों को कक्षा मे बांटें।
- तुम्हारे घर से चाँद कहाँ और कैसा नज़र आता है? इस विषय पर बातचीत करते हुए पूछें कि ऐसा क्यों होता है?

- कक्षा में बच्चों के साथ इस बिंदु पर भी चर्चा की जाएगी कि लड़की पहले चाँद को बिल्कुल गोल देखती है, गोल कहती है लेकिन फिर उसे तिरछा भी कहती है, क्यों? आप स्वयं देखें और पता लगाएं।

आकलन करते समय...

बच्चों के साथ 'गप्पे' पर विस्तार से की गई बातचीत के बाद उनसे निम्नलिखित बिंदुओं पर उनकी अभिव्यक्ति को आमंत्रित किया जा सकता है–

- अगर आप चाँद से गप्प करते तो क्या-क्या कहते?
- चाँद से गप्प करते हुए आपकी और लेखक की कल्पना में क्या अंतर है?
- चाँद को किस-किस रूप में देखा गया है?

कक्षा में 'गप्प' पर बातचीत करते हुए बच्चों से यह निकलवाने का प्रयास किया जाएगा कि गप्प का संबंध यथार्थ से न होकर कल्पना से ज्यादा है। गप्प में एक कहानी गढ़ने की बात भी कहीं-न-कहीं शामिल है।

कल्पना के आधार पर तोता, चिड़िया, दादा-दादी आदि किसी से भी गप्प करते हुए संवाद लिखवाया जा सकता है।

बच्चों से गप्प करते हुए समान और अलग बिंदुओं की पहचान की जाएगी और यह जानने की कोशिश की जाएगी कि बच्चों ने अपनी गप्प में किस आधार पर इन बिंदुओं को शामिल किया है।

कविता की संरचना

कविता में शब्दों के रखरखाव की समझ और उनकी प्रस्तुति/स्थान, लिखने का तरीका, ध्वनि, आरोह, अवरोह, विराम चिह्न बहुत मायने रखते हैं इस पर बच्चों का ध्यान दिलाया जाना चाहिए–

दम नहीं लेते हैं जब तक बिल्कुल ही
गोल न हो जाएँ।

- बिल्कुल गोल लिखने के तरीके पर चर्चा करें। उसके कई प्रयोग लिखकर करवा सकते हैं।
- बच्चों से इस बिंदु पर चर्चा की जा सकती है कि लेखक एक ही शब्द को दो तरीकों से लिख रहा है। इन दोनों में क्या अंतर है।
- बच्चों में बिंब की समझ विकसित करने के लिए कविता की पंक्तियों पर आधारित चित्रांकन के रूप में अभिव्यक्ति का कार्य करवाया जा सकता है–

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं।
और बढ़ते हैं तो बस
यानी कि बढ़ते ही चले जाते हैं।

- घटते ही जाना और बढ़ते ही जाना के क्या-क्या प्रयोग बच्चों के मन में हैं, इसे लिखकर या बोलकर करवाया जा सकता है। इससे भाषा का दायरा बढ़ेगा।

आकलन बिंदु

- कविता में शब्द विशेष और वाक्य संरचना से अर्थ सौंदर्य की समझ।
- भाषा की खूबियों की समझ।

भाषा की बारीकियाँ और शैलियाँ

पाठ के अगले चरण में बच्चों को कविता में प्रयुक्त भाषा की बारीकियों और शैलियों से परिचित कराया जाएगा। चर्चा के माध्यम से यह बिंदु उभारने का प्रयास किया जाएगा कि कविता में हिंदी की प्रचलित शैली से भिन्न परंतु आकर्षक उर्दू शैली का प्रभाव है।

खूब हैं गोकि!
वाह जी वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!

बच्चों से यह पूछा जाएगा कि कविता के वे कौन-कौन से स्थल हैं जहाँ उर्दू शैली का यह प्रभाव नज़र आता है।

- प्रस्तुत कविता में चाँद के लिए बहुत सारे विशेषण शब्दों का प्रयोग किया गया है, जैसे–गोल, तिरछे, गोला-चिट्टा, गोल-मटोल आदि। बच्चों से यह कहा जाएगा कि वे बताएं–
    - ❖ प्राय: चाँद के लिए किस तरह के विशेषण शब्दों का प्रयोग किया जाता है?
    - ❖ चाँद के अलावा बिल्ली, मक्खी, बंदर आदि प्राणियों के लिए अक्सर किस तरह के विशेषण प्रयोग में लाए जाते हैं?
    - ❖ आप चाँद के लिए किन विशेषण शब्दों का प्रयोग करना चाहेंगे और क्यों?
    - ❖ अगर माना तो क्यों?

आकलन बिंदु

- प्रकृति से निजी रिश्ता।
- भाषायी बारीकियां और शैली की समझ।

खोजी प्रवृत्ति बनाने मे सहायक

बच्चों से कविता पर आधारित निम्नलिखित में से एक दो परियोजना कार्य करवाए जा सकते हैं–

- अपनी-अपनी भाषा में चाँद से जुड़े लोकगीत का संग्रह कीजिए।
- बच्चों को तारामंडल का भ्रमण कराया जा सकता है और उनसे यह कहा जा सकता है कि वे भ्रमण पर आधारित एक रिपोर्ट तैयार करें।
- बच्चे अपने दादा-दादी, नाना-नानी या भूगोल, विज्ञान के शिक्षक से चाँद के बारे में जानकारी एकत्र करें और एक रिपोर्ट तैयार करें।
- ऊँची-ऊँची बिल्डिंग, घनी बस्ती तथा खुले मैदान में चाँद कैसा नज़र आता है इसके बारे में लिखें।

आकलन बिंदु

- परिवेश और प्रकृति का सूक्ष्म अवलोकन।
- शोध करके जानकारी एकत्र करके उसे संयोजित करना।

आकलन करते समय

- कल्पना शक्ति और कविता लिखवाते समय बच्चों से तार्किकता की अपेक्षा न करें बल्कि यह देखें कि उसने अपनी कल्पना में किस अनुभव संसार को और किस भाषा-संसार को शामिल किया है।
- अपनी भाषा गढ़ने की कितनी कोशिशें की हैं और वे कहाँ तक सार्थक बन पड़े हैं।
- बच्चे दुनिया और प्रकृति से क्या रिश्ता बना पा रहे हैं।

भाग 3

मूल्यांकन कैसे-कैसे?

इस संबंध में यह कहना तर्कसंगत होगा कि जिस प्रकार सभी शैक्षिक कार्यों की प्रकृति भिन्न-भिन्न होती है, विद्यार्थी विशेष के काम करने के तरीकों में फर्क होता है, हर विषय के प्रति समझ बनाने के समय व पद्धतियों में भिन्नता होती है, ठीक उसी प्रकार आकलन की युक्तियों व माध्यमों में भी भिन्नता लाई जाए। यदि उपलब्धता हो तो संचार-तकनीकी के आधुनिक साधनों का, अवलोकन एवं रिकार्डिंग के लिए कम्प्यूटर आदि, श्रवण कौशल के लिए टेपरिकार्डर आदि का भी उपयोग किया जा सकता है। चेष्टा यह रहे कि बच्चे की रचनात्मक प्रतिभा की परख को पैमाना बनाया जाए, समग्रता के आवरण में ढली आकलन की प्रक्रिया पर अनावश्यक गंभीरता का तनाव हावी न हो और सीखने का रस कहीं खो न जाए। कुछ तरीके सुझाव के लिए दिए जा रहे हैं।

अवलोकन–कक्षायी गतिविधियों के दौरान व्यक्तिगत या सामूहिक दोनों ही रूपों में विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया तथा उसके व्यक्तित्व के विकास के बहुत से पहुलओं का अवलोकन किया जा सकता है। अवलोकन के दौरान दर्ज़ की गई टिप्पणियां शिक्षक, अभिभावक व स्वयं विद्यार्थी की मदद करेंगी कि वे किस विषय को किस प्रकार से सीख रहे हैं, सीखने के दौरान उनसे कैसी चूक हो रही है और कहाँ-कहाँ वे श्रेष्ठतर प्रदर्शन कर पा रहे हैं। किस बच्चे के साथ कौन सी शिक्षण तकनीक बेहतर परिणाम दे रही है, यह अवलोकन द्वारा पता चल जाता है, बस ध्यान रहे कि अवलोकन के दौरान पूर्वाग्रहों से बचा जाए।

पोर्टफोलियो–भिन्न-भिन्न विषयों के अन्तर्गत बच्चों से तरह-तरह के कार्यकलाप करवाए जाते हैं। समय की एक निश्चित अवधि में विद्यार्थी द्वारा किए गए कार्यों का संग्रह, ये रोजमर्रा के काम भी हो सकते हैं और शिक्षार्थी के कार्य के उत्कृष्ट नमूने भी हो सकते हैं। पोर्टफोलियो के आधार पर प्रतिबिंबात्मक टिप्पणियाँ तैयार की जा सकती हैं। बच्चों के कार्यों का संग्रह फाइलों में रखकर भी किया जा सकता है फिर कक्षा में दीवार पर कपड़ों के थैलों में भी किया जा सकता है या फिर बच्चों की नोटबुक में उनके सृजनात्मक कामों को तारीख के साथ लिखवाएं फिर उसका अवलोकन करने में सुविधा रहेगी।

लेखन संबंधी प्रदत्त कार्य–कक्षा में व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से बच्चों से तरह-तरह के कार्य करवाए जाते हैं, ये कार्य गृहकार्य के रूप में भी हो सकते हैं। इन कार्यों के माध्यम से सूचनाओं की खोज करने, नए-नए विचारों को गढ़ने, फिर उन्हीं विचारों को मौखिक या लिखित रूप से प्रस्तुत करने के अवसर दिए जाएं। कार्य करने के दौरान अध्यापक विवेचनात्मक टिप्पणी द्वारा अपनी राय प्रस्तुत करेगा।

पेपर पेन टेस्ट–अभी तक मूल्यांकन का एक आधार रहा है कि प्रश्न दाग दो और बच्चा उसका उत्तर लिखे और ऊपर से अपेक्षा यह कि वह अध्यापक के मन-मुताबिक उत्तर दे तो अच्छे अंक पाएगा। ऐसा क्यों? बच्चे की अपनी समझ क्यों नहीं? हमारे जीवन-मूल्यों को ही बच्चा भी ओढ़े ऐसी पाबंदी क्यों? आकलन के और भी बहुत से आधारों की बात की गई है फिर भी परीक्षा को बिल्कुल नकारा नहीं जा सकता। पेपर पेन टेस्ट कई तरह के हो सकते हैं लेकिन उनका आकलन भी भिन्न-भिन्न ढंग से होगा।

- विद्यार्थी को तैयारी का पर्याप्त समय दिया गया। पहले से उन प्रश्नों पर चर्चा की गई, अभ्यास किया गया तब उससे कुछ प्रश्न पूछे गए। जैसा कि संकलित परीक्षा में होता है। इसके आकलन बिंदु हो सकते हैं कि बच्चे ने पाठ को कितना समझा, ग्रहण किया फिर वह कितनी सृजनात्मक शैली में उसे लिख पाया। सार्थक भाषा में, तर्कपूर्ण शैली को अपनाकर कह गया।
- कुछ प्रश्न जो उसे पाठ से आगे ले जाएंगे। जिसमें कक्षा चर्चा हुई है और उसका अपना अनुभव भी शामिल है, उसने क्या पढ़ा है या उसका कितना समावेश है आदि कुछ इन आधारों पर आकलन किया जा सकता है।
- कभी-कभी पाठ का कुछ अंश पढ़ाकर तुरंत प्रश्न पूछना। ये प्रश्न भावबोध पर हो सकते हैं कुछ तथ्य पर हो सकते हैं। ये प्रश्न छोटे-छोटे हों तो बेहतर है लेकिन इसके आकलन में यह ध्यान देना होगा कि समग्र

व सटीक अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। कारण, बच्चे को तैयारी का समय नहीं मिला है उसने केवल एक बार कक्षा में समझा है, अभी समझ बनी नहीं है। इसलिए वह सटीक उत्तर के आस-पास भी पहुंचा है तो उसके प्रयास को सराहना चाहिए।

'प्रश्नों का स्वरूप' एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। हम सभी जानते हैं कि विद्यार्थियों का मूल्यांकन चाहें किसी भी प्रणाली/विधि से किया जाए, प्रश्नों का स्वरूप व सरंचना बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। मौखिक रूप से प्रश्न किए जाएँ अथवा लिखित रूप से, उनका स्वरूप एवं सरंचना हर स्थिति में विशेष रूप से ध्यान देने वाली बात है। विद्यार्थी की दिन-प्रतिदिन की प्रगति की जाँच के लिए प्रश्न बनाए जाएँ अथवा साप्ताहिक, मासिक या त्रैमासिक प्रगति विवरण के लिए, प्रश्नों का स्वरूप कुछ इस तरह का होना चाहिए–

विषय-वस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले प्रश्न

प्रश्नों का स्वरूप कुछ इस प्रकार का हो वे बच्चों को पढ़ी गई या देखी गई सामग्री से कहीं आगे जाकर सोचने, समझने, तर्क करने व विश्लेषण करने के अवसर प्रदान कर सकें। कहने का तात्पर्य यह है कि ऐसे न हों जो केवल 'स्मृति' या 'पठन' कौशल का आकलन कर सकें बल्कि पढ़े आगे ले जाने के अवसर दें।

उदाहरण के तौर पर–

- अनुमान और कल्पना का 5 प्रश्न (पृष्ठ 11)
- कविता से आगे - 1 और 3 प्रश्न (पृष्ठ 2)

(वसंत, कक्षा-8, एन.सी.ई.आर.टी. की हिन्दी की पाठ्य पुस्तक)

कल्पनाशीलता पोषण करने वाले प्रश्न

भाषा का सवाल हो या किसी अन्य विषय का, कल्पनाशीलता एक ऐसा गुण है जिसके विकास के अवसर हर बच्चे को मिलने ही चाहिए। इस प्रकार के अवसर देने के लिए 'रटंत कौशल' वाले प्रश्नों से बचना होगा। प्रश्नों का स्वरूप कुछ इस प्रकार होना चाहिए–

मह-बहलाना - का प्रश्न (पृष्ठ 17)
(वसंत, कक्षा-8, एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक)
अनुमान और कल्पना - 1 - 2 (पृष्ठ 57)
(वसंत, कक्षा-8, एन.सी.ई.आर.टी. की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक)

3. विषय-वस्तु का नवीन परिस्थितियों में उपयोग सम्बन्धी प्रश्न

शिक्षार्थियों से केवल यही अपेक्षित नहीं है कि वे नवीन तथ्यों, प्रत्ययों, सिद्धांतों व प्रक्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करें। बल्कि यह भी अपेक्षित है कि वे अर्जित की गई जानकारियों का उपयोग जीवन परिस्थितियों में कर सकें, नए निष्कर्षो और सिद्धान्तों को प्रतिपादित कर सकें, ऐसे कौशल तभी विकसित हो पाएंगे जब विषय-विस्तु को विस्तार देने वाले प्रश्न पूछे जाएँ। उदाहरण के तौर पर–

कहानी से आगे 2 प्रश्न (पृष्ठ 41)
(वसंत, कक्षा-6, एन.सी.ई.आर.टी. की इतिहास की पाठ्यपुस्तक)

4. तर्क एवं विश्लेषण क्षमता पोषित करने वाले प्रश्न

हम सभी जानते हैं कि बच्चों में अनुमान लगाने, तर्क करने, विश्लेषण करने व व्याख्या करने संबंधी कौशल उनके जीवन के शुरुआती दौर से मौजूद होते हैं, यथा तीन वर्ष के बच्चे का यह कहना 'डॉगी ने भी तो टॉफी खाई थी, वह तो बीमार नहीं पड़ा' उसकी तर्क क्षमता का परिचय देता है, बच्चे की ये स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ एवं कौशल विद्यालयी परिधि के भीतर आते ही न जाने कहाँ खो जाते हैं। इन कौशलों के पोषण एवं विकास के लिए प्रश्नों के स्वरूप पर विशेष रूप से ध्यान देना होगा।

शीर्षक की बात - 1 प्रश्न (पृष्ठ 77)
(वसंत, कक्षा-8, एन.सी.ई.आर.टी. की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक)
कहानी से आगे - 1, 3 प्रश्न (पृष्ठ 124)
(वसंत, कक्षा-8, एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तक)

5. सवालों के उत्तर में पूर्व अनुभवों जानकारी के उपयोग के अवसर देने वाले प्रश्न

यह एक प्रमाणिक सत्य है कि विद्यालय आने से पूर्व बच्चों के पास जिन्दगी के लगभग हर पहलू से जुड़े भिन्न-भिन्न अनुभव होते हैं। शिक्षाशास्त्री एवं कक्षा शिक्षण पर किए गए शोध दर्शाते हैं कि बच्चों के अनुभवों को शिक्षायी प्रक्रियाओं से जोड़ना हर स्थिति में बच्चों के 'उपलब्धि स्तर' में तो वृद्धि करता ही है, शिक्षण प्रक्रियाओं को जीवंत व मनोरंकज भी बनाता है। अत: आवश्यक है कि प्रश्नों की बनावट ऐसी की जाए कि जिनका उत्तर देने में विद्यार्थी अपने पूर्व अनुभवों का रचनात्मक उपायोग कर सकें। जैसे–

पाठ से आगे - 3 प्रश्न (पृष्ठ 104)

(वसंत, कक्षा-8, एन.सी.ई.आर.टी. की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक)

आकलन करते समय...

अभी यहाँ पर प्रश्नों के जिन स्वरूपों की बात की गई है, उनके पूछे जाने की सार्थकता एवं प्रासंगिकता तभी है जब हर विद्यार्थी से एक ही तरह से उत्तर की अपेक्षा न की जाए। कहने का तात्पर्य यह है कि अगर प्रश्नों के उत्तर अनुमान लगाने, तर्क सहित व्याख्या करने, कल्पना करने से जुड़े हैं तो सभी विद्यार्थियों के उत्तर तो एक से हो ही नहीं सकते क्योंकि इस तरह के सवालों के उत्तर में तो शिक्षार्थी अपने अनुभवों को आधार बनाएंगे और सबके अनुभव निश्चित रूप से अलग-अलग होंगे। ऐसे ही पूरी कक्षा के बच्चों से एक समान जवाब की अपेक्षा कैसे की जा सकती है?

आम तौर पर शिक्षक एक से उत्तर की अपेक्षा इसलिए करते हैं जिससे कि नोटबुक जाँचना आसान हो जाए, पर क्या इस तरह से हर बच्चे की दक्षताओं की जाँच हो सकती है? निश्चित रूप से उत्तर नहीं में है। अत: मात्र कॉपी जाँचने की सुविधा को केन्द्र में रखकर विविधता भरे चुनौती भरे प्रश्नों का त्याग नहीं करना चाहिए और पाठ्य-पुस्तकों की परिधि से बाहर की परिधि को समेटने वाले प्रश्नों पर कार्य करना चाहिए।

आकलन के संदर्भ में एक और बात महत्त्वपूर्ण है। वह है-आकलन के लिए समुदाय का सहयोग आमंत्रित करना। विषय की प्रवशति वे उद्देश्यों के अनुसार, विद्यालय के भीतर अथवा बाहर, औपचारिक-अनौपचारिक दोनों ही रूपों में अभिभावकों की आकलन में भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है। अन्तत: विद्यार्थियों की उन्नति व कौशल अर्जित करने संबंधी अभिलेख (रिकार्ड) तैयार करना और सही तरीके से विद्यार्थियों, अभिभावकों व संबंधित को प्रस्तुत करना जो इस प्रक्रिया के आवश्यक घटक हैं।

रेकार्डिग/रिपोर्टिंग किसको और कैसे?

रिपोर्टिंग और पृष्ठपोषण (फ़ीडबैक) देना

सीखने की प्रक्रिया के दौरान जब आकलन साथ-साथ चल रहा होता है तब अध्यापकों के पास बच्चों के बारे में बहुत-सी सूचनाएँ जुट जाती हैं। सूचनाएँ दर्ज़ कर लेने के बाद उनका विश्लेषण कर लेने के बाद इनका क्या किया जाए, यह जान लेना भी ज़रूरी होगा। इस बात से आप सहमत होंगे कि सामान्यत: सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों के सीखने और प्रगति के आकलन से जुड़ी सूचनाएँ बच्चे और विद्यार्थी दोनों को ही एक रिपोर्ट कार्ड के माध्यम से दी जाती है। ये रिपोर्ट कार्ड एक प्रकार से भिन्न-भिन्न विषयों में बच्चों के प्रदर्शन और निष्पादन की एक तस्वीर विद्यालयी सत्र में आयोजित टैस्टों, परीक्षाओं में प्राप्त अंकों और ग्रेडों के आधार पर प्रस्तुत करते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों का जो आकलन किया जाता है और इस संबंध में वे जो भी रिकॉर्ड रखते हैं, वे सभी अध्यापकों की मदद करते हैं–

- यह समझने में कि बच्चे किस तरह और कितना सीख पा रहे हैं,
- स्वयं की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करने में,
- प्रत्येक बच्चे की सीखने की प्रक्रिया को समुन्नत करने के उद्देश्य से उन्हें और अधिक अर्थपूर्ण अवसर तथा अनुभव प्रदान करने की दिशा में।

उपर्युक्त संदर्भ में रिपोर्टिंग रचनात्मक, संप्रेषणीय तथा इस तरह से प्रस्तुत की जानी चाहिए जिससे कि संबंधित व्यक्ति उसे सरलतापूर्वक समझ सके। यह तभी संभव है जब अध्यापक विद्यार्थी के संबंध में उन सभी सूचनाओं को प्रतिबिंबित करें जो उन्होंने अपने दिन-प्रतिदिन के अनुभव के आधार पर हासिल की हैं और सीखने के क्षेत्र विशेष के संकेतकों के आधार पर प्राप्त की हैं।

अध्यापक द्वारा

सावधिक रूप से किया जाने वाला आकलन आपके लिए तभी मददगार है, जब आप–

- निश्चित अवधि के भीतर (हर तीन महीने के भीतर) निरंतरता को आधार बनाते हुए पोर्टफ़ोलियो तथा दूसरे रिकॉर्ड का आकलन करें,
- बच्चे से जुड़ी महत्वपूर्ण रुचिकर घटनाओं का पुनरावलोकन करें तथा बच्चे के व्यक्तित्व के और भी पहलुओं का आकलन करें,
- बच्चे के संबंध में पहले से अर्जित की गई सूचनाओं से तुलना करें,
- सुनिश्चित करें कि एक बार जिस समस्या का सामना किया गया है, उसकी पुनरावृत्ति न हो,
- समस्याओं/कठिनाइयों को किस तरह से सुलझाया गया है, उन तरीकों को समझा जाए,
- आकलन करें कि बच्चे ने किसी प्रकार की प्रगति की है अथवा नहीं। यदि किसी प्रकार की कमी रह जाती है तो उन पर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान ही ध्यान दिया जाए।

अध्यापक की प्रतिबिंबात्मक टिप्पणी प्रगति पत्रक बनाने में मदद करेगी। प्रगति पत्रक एक निश्चित अवधि में बच्चे की प्रगति से संबंधित स्पष्ट तस्वीर प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। इसी स्थिति में अध्यापक द्वारा बच्चों के सीखने की दिशा को अर्थपूर्ण बनाया जा सकता है और समझ तथा कौशल प्राप्ति के निम्न स्तर से उच्च एवं जटिल स्तर की ओर पहुँचाया जा सकता है। इस तरह से हमें इस बात की समझ बनाने में भी मदद मिलती है कि बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में क्या-क्या कठिनाइयाँ आ रही है और इन कठिनाइयों तथा अंतरों का समाधान किस तरह से ढूढ़ा जा सकता है। पृष्ठपोषण ही वह माध्यम है जिसके जरिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में परिवर्तन लाया जा सकता है।

पृष्ठपोषण के संबंध में महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि अध्यापक द्वारा दी जाने वाली रिपोर्ट में क्या-क्या होना चाहिए। इस रिपोर्ट द्वारा एक निश्चित अवधि में की गई प्रगति का संपूर्ण ब्यौरा होना चाहिए। बच्चे द्वारा की गई प्रगति का उल्लेख किस तरह से किया जा सकता है? आइए, हम इस पर विचार करते हैं कि कौन-कौन सी सूचनाएँ शमिल की जानी चाहिए।

रिपोर्ट–बच्चे द्वारा की जा रही प्रगति को मापना

- विषय क्षेत्रों, में स्तर–1, 2, 3, 4 देना बच्चे के अधिगम तथा प्रदर्शन के उस विस्तार की ओर ध्यान दिलाएँगे, जो चार स्तरीय सूची द्वारा दर्शाया जा सकता है–

  पहला स्तर–जो बच्चे अपेक्षित उद्देश्य से कुछ अधिक कर पा रहे हैं।

  दूसरा स्तर–जो बच्चे अपेक्षित उद्देश्य को पूरा कर पा रहे हैं।

  तीसरा स्तर–वे बच्चे जो सहयोग करने पर अपेक्षित उद्देश्य को पूरा कर पा रहे हैं।

  चौथा स्तर–वे बच्चे जो अपेक्षित उद्देश्य तक नहीं पहुँच पा रहे हैं।
- बच्चे द्वारा किए गए कामों का संग्रह उनका प्रदर्शन बच्चे की सीखने के प्रति समझ बनाने में मददगार होगा,
- बच्चे के व्यक्तित्व के भिन्न-भिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके,
- ग्रेड के साथ-साथ बच्चे के सीखने के तरीकों के बारे में गुणात्मक कथन देकर,
- बच्चे द्वारा किए गए कामों के उदाहरण प्रस्तुत करके,
- बच्चे के सीखने की प्रक्रिया के मजबूत पक्ष को और अधिक उभारकर तथा उन पहलहुओं पर विशेष ध्यान देकर जहाँ पुनर्बलन की जरूरत है।

रिपोर्ट तैयार करते समय अध्यापक के लिए ज़रूरी है कि वह बच्चे और माता-पिता के साथ पृठपोषण संप्रेषित करें। यह पहले बहुत ही महत्वपूर्ण है और बहुत ही सावधानीपूर्वक रचनात्मक तथा सकारात्मक तरीके से प्रेषित किया जाना चाहिए।

बच्चे को संप्रेषित करना

दिन-प्रतिदिन के अध्यापन में जब बच्चे बहुत-सी गतिविधियों में संलग्न होते हैं, अध्यापक अनौपचारिक रूप से पृष्ठपोषण देते चलते हैं। बच्चे अध्यापकों, दूसरों बच्चों या समूहदार जोड़ीदार की कार्य प्रणाली का अवलोकन करते समय स्वयं की गलतियाँ भी दूर कर लेते हैं और समुन्नत भी करते चलते हैं। सीखने के संदर्भ में स्थिति समस्याजनक तब

हो जाती है जब रिपोर्ट केवल यह दर्शाती है कि बच्चे सही तरह से कर नहीं पाते, यानी कि उनकी अक्षमताओं और असफलताओं का ही चित्रांकन किया जाता है। इस तरह की रिपोर्ट बच्चों को निरुत्साहित करती हैं अध्यापक को चाहिए कि वह–

- प्रत्येक बच्चे से उसके काम के बारे में बातचीत करे, कौन-कौन सा काम अच्छी तरह से किया गया है, कौन-सा नहीं और कहाँ-कहाँ सुधार की ज़रूरत है,
- बच्चे और अध्यापक दोनों मिलकर इस बात की पहचान करें कि बच्चों को किस तरह की मदद की ज़रूरत है,
- बच्चे को अपना-अपना पोर्टफोलियो देखने तथा वर्तमान में (हाल ही में) किए गए कामों की तुलना पुराने काम से करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए,
- काम करने की प्रक्रिया के दौरान या बाद में भी सकारात्मक रचनात्मक टिप्पणियाँ देनी ज़रूरी हैं।

अपने लेखन का स्वयं आकलन

स्कूलों में बच्चों के साथ जो सबसे बड़ी ज्यादती हम करते हैं वह यह है कि हम उन्हें अपने काम का खुद मूल्यांकन करने का मौका नहीं देते। इससे बच्चों को खुद निर्णय लेने की ओर अपने में यकीन करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। इसके लिए कई गतिविधियाँ सोची जा सकती हैं। एक प्रस्तावित है–अपने पोर्टफोलियो (क्रमिक प्रगति) को पलटें। अपने कार्य के बारे में सोचें। पहले लेखन की तुलना में बाद के लेखन में क्या परिवर्तन आए हैं, उन पर गौर करें। समूची प्रक्रिया के दौरान उपजे अनुभवों को लिखें।

सबसे महत्वपूर्ण बात जिसे पृष्ठपोषण के माध्यम से सबसे अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए वह यह है कि स्वयं की तुलना अपने पिछले कार्यों की प्रगति से करें न कि दूसरे के कार्यों से। उदाहरण के तौर पर "कल एक सप्ताह पहले तक मैं क्या कर पा रही थी और आज मेरा स्तर कहाँ है?" बच्चों के बीच तुलना करना किसी भी मायने में हितकारी नहीं है। आमतौर पर इससे कुछ इस तरह की धारणा जन्म लेती है 'मैं तो एकदम बेकार। मैं तो किसी भी काम की नहीं।' स्थिति इससे भिन्न भी है, यदि किसी बच्चे ने उच्चतम अंक प्राप्त किए हैं या बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है, तो उस पर विद्यालय एवं घर दोनों की स्थलों पर उस स्थिति का बनाए रखने का दबाव बना रहता है।

अभिभावकों के साथ बाँटना

सामान्यत: सभी अभिभावक को यह जानने में रुचि रहती है कि उनकी बच्ची विद्यालय में कैसा कर रही है, उसने क्या-क्या सीखा है, दूसरे बच्चे किस तरह का प्रदर्शन कर रहे हैं एक निश्चित समयावधि के भीतर उनके बच्चे की क्या प्रगति है। आमतौर पर अध्यापक यह महसूस करते हैं कि उन्होंने अभिभावकों को उनके बच्चों की प्रगति के बारे में भली-भाँति संप्रेषित कर दिया है "अच्छा कर सकती है, 'अच्छा', 'खराब', अधिक प्रयास करने की ज़रूरत है," किसी भी अभिभावक के लिए इन टिप्पणियों की क्या सार्थकता है? क्या इस तरह की टिप्पणियाँ किसी तरह की स्पष्ट सूचना कर सकती हैं कि उनकी बच्ची क्या कर सकती है और क्या सीख चुकी है। यह सुझाव दिया जाता है कि आप आसानी से समझी जाने वाली भाषा में पृष्ठपोषण दें–

- बच्ची क्या-क्या कर सकती है, क्या करना चाह रही है और क्या करने में उसे कठिनाई होती है,
- बच्चे को क्या-क्या करना पसंद है और क्या नहीं,
- बच्चों द्वारा किए गए कामों के नमूने गुणात्मक कथन, मात्रात्मक पृष्ठपोषण के साथ प्रस्तुत किए जा सकते हैं,
- बच्चों ने किस तरह से सीखा (प्रक्रिया) और सीखने में कहाँ-कहाँ कठिनाई का सामना किया,
- बच्चों के कार्यों की चर्चा अभिभावकों से करना जो उनकी सफलता और सुधार के क्षेत्रों को दिखाने में मदद करे,
- कठिनाई अनुभव करने पर काम पूरा कर सके या नहीं,
- सहयोग, उत्तरदायित्व, संवेदनशीलता, रुचि आदि पहलुओं पर बात करनी ज़रूरी होगी,
- अभिभावकों के साथ चर्चा करना कि (अ) बच्चों की किस तरह से मदद कर सकते हैं, (ब) घर पर उन्होंने किस तरह का अवलोकन किया हैं।

आप बच्चे की उन्नति/प्रगति को ग्राफ (लेखा चित्र) के माध्यम से भी प्रस्तुत कर सकते हैं, जिसे समझना बच्चों और अभिभावकों दोनों के लिए सरल होगा।

बच्चों के अधिगम तथा प्रगति के संबंध में एकत्रित की गई सूचनाएँ तथा पृष्ठपोषण अंततः समग्र शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समुन्नत करेगी और बेहतर तरीके से सीखने के लिए प्रोत्साहित करेगी। आकलन का चक्र प्रभावशाली, उपयोगी रूप से चलता रहे, इसके लिए ज़रूरी है कि वे अपनी शिक्षण अधिगम प्रणाली, सहायक शिक्षण सामग्री, गतिविधियों के आयोजन/नियोजन और दूसरे बहुत से पहलुओं पर पुनर्विचार करें।

टीचर्स रिफ्लेक्शन-बच्चों के अधिगम को समुन्नत करना

कुछ महत्वपूर्ण सवाल जो आपको पुनर्विचार करने तथा दूसरों के साथ चर्चा करने में मदद करेंगे–

- क्या मेरे बच्चे पूरी तरह से गतिविधियों में संलग्न हैं और ठीक तरह से सीख पा रहे हैं? यदि नहीं तो वे किस स्तर पर हैं?
- क्या मैं बच्चों की भिन्न-भिन्न ज़रूरतों को समझ सकती हूँ? यदि हाँ तो उन ज़रूरतों की समझ के आधार पर मैं क्या करने वाली हूँ?
- क्या कुछ ऐसे बच्चे भी है, जो पहले स्तर तक पहुँचने में भी कठिनाई अनुभव कर रहे हैं? उन्हें प्रेरित तथा उत्साहित करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए?
- बच्चों को एक स्तर से अगले स्तर तक ले जाने के लिए मुझे अपनी अध्यापन अधिगम प्रक्रिया को उन्नत करने के लिए क्या करना चाहिए?
- मैं बच्चों को स्व आकलन के लिए किस तरह प्रेरित कर सकती हूँ?
- मुझे किन-किन क्षेत्रों में कठिनाइयाँ आती हैं- (बच्चों को समूह बनाने में, बच्चों की उम्र और स्तर के अनुसार गतिविधियों का चयन करने में, सामग्री की कमी व अनुपयुक्तता पर),
- मुझे और भी किस तरह की सहायता की ज़रूरत है? मुझे कौन इस तरह की मदद दे सकता/सकती है? (शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े लोग, अभिभावक, समुदाय, अन्य अध्यापक),
- बेहतर अध्यापन अधिगम अभ्यासों के लिए और क्या-क्या प्रयास किए जा सकते हैं?

यह संभव है–आप ऐसा कर सकते हैं

आकलन एक बहुत रुचिकर तथा लाभदायी उपयोगी प्रक्रिया बन सकती है। इसका साक्षात् अनुभव करने के लिए हमें ध्यान रखना होगा–

- हम बच्चों का आकलन क्यों कर रहे है, इस बात में स्पष्टता हो,
- बच्चों पर किसी तरह का ठप्पा नहीं लगाना होगा, जैसे–मंद, निकृष्ट, बुद्धिमान, व्यवधान पहुँचाने वाले और बच्चों की आपस की तुलना से भी बचना होगा,
- विषयों तथा अन्य क्षेत्रों में बच्चों के सीखने संबंधी प्रगति के बारे में सूचनाएँ इकट्ठी करने के लिए विविध प्रकार के तरीकों का इस्तेमाल करना होगा,
- सतत् रूप से सूचनाओं का संग्रहण और उन्हें दर्ज करना होगा,
- प्रत्येक बच्चे के सीखने के तरीके, उसकी गति और उत्तर देने की शैली को महत्त्व देना होगा,
- सतत् आधार पर रिपोर्ट देना और प्रत्येक बच्चे की प्रतिक्रिया के प्रति संवेदनशीला रहना होगा,
- नकारात्मक टिप्पणियों से बचना होगा। आकलन व पृष्ठपोषण के समय तकनीकी शब्दावली का उपयोग किया जा सकता है,
- सरल व स्पष्ट भाषा में पृष्ठपोषण देना जो बच्चे को सकारात्मक दिशा की ओर प्रवृत्त करने में मदद करे,
- अगला अध्याय, चर्चा किए गए उपगमों की परिधि में उच्च प्राथमिक स्तर पर बच्चों के मातृभाषा (हिंदी) के आकलन में सहायक होगा।

आकलन योजना

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए विकसित नए पाठ्यक्रम-नई शिक्षण पद्धति की भावना के अनुरूप सभी शिक्षकों को आकलन को एक योजनाबद्ध तरीके से करना चाहिए। इस योजना की रूपरेखा आपके स्थान विशेष की ज़रूरतों के अनुरूप कुछ इस प्रकार हो सकती है–

- शिक्षक वर्ष भर कक्षा के सभी बच्चों का सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान, लगातार अवलोकन करें और साथ-साथ सुधारात्मक प्रयास करते रहें,

- औपचारिक रूप से किए गए आकलन एवं रिकॉर्डिंग, वर्ष में तीन बार चार माह के अंतराल पर मूल्यांकन कर सकते हैं–
  इसे ध्यान में रखते हुए कि पढ़ते समय किए गए सवाल–जवाब को एक अंतराल के बाद किए जाने में अंतर होगा। विद्यार्थी इतने समय में उसी प्रश्न पर एक अलग सोच भी बना सकते हैं उसके तर्क भी अलग हो सकते हैं।
- आकलन गतिविधि आधारित तरीके से ही करें। बच्चों से तरह–तरह की गतिविधियाँ करा कर उनके शैक्षिक स्तर की जानकारी लें।
- आकलन के दौरान शाला या कक्षा का माहौल अन्य दिनों की ही तरह बिल्कुल सामान्य रहे। जिस सरल ढंग से सीखना–सिखाना चलता है–गतिविधि, बातीचीत, प्रश्न–उत्तर, चर्चा, अवलोकन आदि वैसे ही आकलन चलता है।
- एक बार में सभी बच्चों को ध्यान से देखना और आकलन तथा सुधार की दृष्टि से बारीकियाँ नोट करना कठिन होगा इसलिए शिक्षक एक बार में 5–6 बच्चों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। आकलन बच्चों को टोलियों में बिठा कर या अलग–अलग तरीके से किया जा सकता है। आकलन रिकॉर्ड करने के लिए प्रत्येक कक्षा के लिए शिक्षक एक आकलन–रजिस्टर बनाएं जिसमें कम–से–कम एक पन्ना तो हर बच्चे के लिए हो। यह रजिस्टर हमेशा शाला में रहे जिससे बच्चों के माता–पिता जब चाहें बच्चों की प्रगति देख पाएँ।
- हर बच्चे का रिकॉर्ड नोट करें जिसकी टिप्पणियाँ स्पष्ट, सटीक और विश्लेषणात्मक हों और बच्चों को सिखाने के प्रयासों के लिए उनका उपयोग हो सके। प्रत्येक चरण में सभी बच्चों के आकलन के बाद सुधार की दृष्टि से आकलन–प्रपत्र में से महत्त्वपूर्ण जानकारी निकाली जाए जैसे, किस बच्चे को सीखने में कौन–सी कठिनाई आ रही है?
- आकलन से प्राप्त जानकारी के आधार पर बच्चों की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए उनके विकास के लिए पहले से अधिक प्रभावी योजना बनाई जाए जैसे, किन बच्चों को एक साथ बैठाकर सिखाया जा सकता है, किस तरह की गतिविधियाँ उनके लिए उपयुक्त होंगी, किस तरह से उन्हें आपस में सीखते हुए प्रोत्साहन दिलाया जा सकता है, आदि।
- इस तरह के आकलन में शिक्षक अपना एवं अपने द्वारा कराई जा रही शिक्षण–प्रक्रिया का भी आकलन करें और अपनी शिक्षण–प्रक्रिया में सुधार करके बच्चों को सीखने के लिए प्रेरित करें। इस तरह प्रत्येक चरण के आकलन के बाद लगातार सुधार हो—सिखाने के तरीकों में और सीखने के अवसरों में।
- आकलन तथा टेस्ट के निष्कर्षों के आधार पर बच्चों के माता–पिता को देने के लिए एक प्रगति पत्रक बनाएँ। इस प्रगति पत्रक में शिक्षक आकलन और सत्रांत परीक्षा के आधार पर बच्चों की प्रगति का विवरण देंगे,
- आकलन के आधार पर अगली कक्षा के शिक्षक को जानकारी भी दी जाए।

आकलन योजना तैयार करते समय यह ध्यान रखना भी ज़रूरी है कि किन बिंदुओं को आधार मानकर आकलन किया जाए।

स्वमूल्यांकन, पठन साथी और अभिभावक की भागीदारी

टिप्पणी देते समय क्या हम इन बातों पर ध्यान दे रहे हैं?

- सीखने की मात्रा हर बच्चे के लिए अलग–अलग हो सकती है और उसके संदर्भ में सवालों को जवाब देने का आत्मविश्वास भी अलग–अलग। इसलिए किसी बच्चे के लिए यह कहना कि इसने सब कुछ सीख लिया और दूसरे के लिए यह कहना कि इसने कुछ नहीं सीखा या कम सीखा, दोनो ही सही नहीं है।
- सीखना एक प्रक्रिया है न कि एक घटना। इसका अर्थ यह है कि जब भी हम कुछ करते हैं उससे हम कुछ सीखते हैं। कोई पल ऐसा नहीं होता जब हम कह सकें कि यह बच्ची इस बारे में पहले कुछ भी नहीं जानती थी और अब जान गई है। सीखना धीरे–धीरे ही हो पाएगा और बच्चों की अवधारणाएँ धीरे–धीरे ज्यादा व्यापक और ज्यादा संदर्भों में उपयोग के लायक बनती जाएंगी। मूल्यांकन के समय इस बाद पर ध्यान देना होगा।
- कक्षा में सभी बच्चे सीखने की प्रक्रिया से जुड़े है पर फिर भी बहुत से बच्चे कुछ बातें नहीं समझ पा रहे हैं, वे क्यों नहीं समझ पा रहे, इस तरह की समझ बनाना हमारे लिए मुश्किल हो जाता है पर हम यह तो सोच ही सकते है कि उन बच्चों को अधिक से अधिक मौकें देते रहें।

- विद्यालयों शिक्षा का प्राथमिक स्तर हो या उच्च प्राथमिक स्तर, बच्चों को प्रोत्साहित करना उनके सीखने के लिए ज़रूरी है इसके द्वारा किए गए कार्य पर सकारात्मक टिप्पणी उसे ऐसा अहसास न हो कि यह काम तो उसके बस के बाहर का है। बच्चों को कमतर, धीमे सीखने वाला, आदि श्रेणियों में बाँटना उनकी आगे बढ़ पाने की संभावनाओं को कम कर देता है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद बहुत पहले से यही कह रहे है। आकलन करते समय हमे उनके अनुभवों को अपने अनुभवों के संदर्भ में टटोलना होगा। ऐसा ही एक अनुभव प्रस्तुत है–

'क्या बच्चे सीखने की खुशी अनुभव कर रहे है?

मुझे यह देखकर बड़ी परेशानी होती थी कि कैसे छात्रों और अध्यापकों पर सर्वश्रेष्ठ अंकों का भूत सवार रहता है। यह प्रवृत्ति परिवार में जन्म लेती है और फिर अध्यापक भी इसके शिकार हो जाते हैं, बाल आत्माओं पर यह भारी बोझ के समान होती है, उन्हें विकृत करती है। बच्चे में अभी ऐसी क्षमता नहीं है कि वह सर्वश्रेष्ठ अंक पाए, लेकिन माता-पिता यही चाहते हैं कि वह "पाँच" ही लाए, हद से हद वे "चार" पर संतोष कर लेते हैं और बेचारे छात्र को अगर "तीन" मिल जाते हैं तो उसे लगता है मानो उससे कोई बड़ा भारी अपराध हो गया।

अनुभवी अध्यापकों के पाठों वाले विद्यार्थी अपने आपको खुशकिस्मत नहीं समझते और "तीन" पाकर किसी में हीन भावना नहीं पैदा होती है। मैंने इन सच्चे शिक्षकों से बौद्धिक क्रम का कौशल सीखा। मैंने उनकी शिक्षण कला में एक विलक्षण बात पाई–वे बच्चों के मनोमस्तिष्क में ज्ञान प्राप्ति की खुशी की भावना जगाते थे। इन अध्यापकों के पाठों में हर बच्चे की छोटी से छोटी सफलता भी इस हर्षमय आवेग के साथ जुड़ी होती थी कि उन्होंने कोई नई बात जानी है, खोजी है। इन अध्यापकों के अनुभवों के मोतियों को पिरोते हुए मैं यह चेष्टा करता था कि बच्चे अंक पाने के लिए नहीं, बल्कि ज्ञान प्राप्ति की खुशी अनुभव करने के लिए मेहनत करें।'

बाल हृदय की गहराइयाँ
वसीला सुख़ोम्लीन्स्की

मूल्यांकन एक सामूहिक प्रक्रिया

विद्यालयी शिक्षा की बात हो या विद्यालय से बाहर की, सीखने-सिखाने की प्रक्रिया हर समय नितान्त अकेली नहीं होती। सीखने वाले के ईद-गिर्द तरह-तरह की स्थितियाँ हैं, लोग हैं और तरह-तरह की सामग्री भी जिनसे अन्त:क्रिया कर 'सीखना' संभव हो पाता है, मूल्यांकन इसी सीखने के साथ जुड़ा हुआ है–यह बात भी हम जानते हैं। फिर तो हम यह भी जानते होगें कि सीखे जा रहे का मूल्यांकन करना भी एक सामूहिक प्रक्रिया हो सकती है। कक्षायी पद्धतियों में विद्यार्थी है, अध्यापक है और कभी-कभी अभिभावक पालक भी है फिर मूल्यांकन का सारा दारोमदार अध्यापक पर ही क्यों? बेहतर तो यही है न कि मूल्यांकन में भी सभी की प्रतिभागिता दर्ज़ की जाए।

हमारे द्वारा किए जा रहे मूल्यांकनों के तरीके व परिणाम बच्चों को कहीं यह न सिखाएं कि गलती अनिश्चितता और उलझनें जुर्म है।
हमें लगता है कि हमारे बिना बताए बच्चों को उनकी गलती का अहसास होगा ही नहीं और बिना दिखाए वे अपनी गलती को कभी सुधारेंगे नहीं। इस प्रकार जल्दी ही बच्चे विशेषज्ञों पर निर्भर हो जाते हैं। बच्चों को अपने काम का मूल्यांकन खुद करने दें।

जॉन हॉल्ट

अगर इस तथ्य पर हम सबकी स्वीकशति बन गई हैं तो सबसे पहले स्वयं विद्यार्थी को शामिल करते हैं उसके स्वयं के मूल्यांकन की प्रक्रिया में। इसे हम **'स्व मूल्यांकन'** की संज्ञा दे सकते हैं। विद्यार्थी यह अपेक्षा भी नहीं करते कि हर समय कोई बड़ा (अध्यापक) उनके काम पर निगरानी रखे और उन्हें बताता चले कि अब तुम अच्छा कर पा रहे हो या तुम्हें यहाँ सुधार की ज़रूरत है आदि-आदि। कहीं न कहीं वे अपने काम का अध्यापक द्वारा किए जाने वाले मूल्यांकन को अपने विचारों को घेरती हुई बेड़ियाँ भी मानने लगते हैं पर अगर कुछ स्थितियों विशेज़ यानि कि कुछ संकेतकों के लिए उन्हीं से कहें कि वे अपना मूल्यांकन स्वयं करें तो जहाँ एक ओर यह बता अध्यापक व विद्यार्थी के पारस्परिक संबंधों में सद्भावना पैदा करेगी तो दूसरी ओर विद्यार्थी में आत्मविश्वास भी उपजाएगी। मूल्यांकन में यह साझेदारी बच्चे की संकल्पशक्ति को बढ़ाते हुए उसमें समालोचनात्मक दृष्टि भी पैदा करेगी। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि अब वे सीखने की प्रक्रिया से स्वत: स्फूर्त होकर जुड़ना भी चाहेंगे। ऐसी कोशिश पीछे दिए गए उदाहरणों में है।

स्वयं विद्यार्थी को शामिल करने के साथ-साथ उसे सहपाठियों को भी साझेदार बनाया जा सकता है। ऐसा कहते ही हमारे सामने अविश्वास की बहुत सी लकीरें आ खड़ी होती है। हमें लगता है कि **सहपाठी** एक-दूसरे के बारे में निष्पक्ष राय नहीं दे पाएगें, हम इस दुविधा का शिकार भी हो सकते हैं कि वे स्वयं कितना जानते हैं काम के बारे में

जो उनसे किसी प्रकार की राय ली जाए। हमारा शंकालु मन कह सकता है कि आपसी ईर्ष्या और एक-दूसरे के प्रति पूर्वाग्रह जो हमारी मूल्यांकन प्रणाली की ही देन हो सकती है, एक-दूसरे की सही जाँच करने में बाधक बन सकते हैं। क्या आपको नही लगता कि हमारी ये शंकाएँ बहुत हद तक निराधार साबित हो सकती हैं। इस संदर्भ में हम *जॉन हॉल्ट* के उस उत्तर को याद कर सकते है जो उन्होंनें विद्यालयें को बेहतर बनाने के संबंध में पूछे गए प्रश्न के...*"वह कदम होगा हरेक बच्चे को यह अधिकार देना कि वह अपनी शिक्षा को खुद नियोजित करे, खुद निर्देशित करे और खुद ही उसका मूल्यांकन करे। उसे इस बात की अनुमति देना और इसके लिए प्रोत्साहित करना कि वह विशेषज्ञों और ज्यादा अनुभवी लोगें की प्रेरणा और मार्गदर्शन से खुद तय करे कि उसे क्या सीखना है, कब सीखना है, कैसे सीखना है और वह उसे कितनी अच्छी तरह से सीख रहा है।"*

स्वयं विद्यार्थी और उसके सहपाठियों की भागीदारी के साथ-साथ क्यों न मूल्यांकन में **अभिभावकों** की भूमिका पर विचार करें। हमारे पास ऐसे बहुत से आधार हो सकते है जो हमें प्रोत्साहित करेंगे कि अपने विद्यार्थियों की प्रगति संबंधी कुछ जानकारियां हम उनके अभिभावकों से हासिल करें। यह काम इतना आसान तो नहीं पर असंभव भी नहीं। पहली मुश्किल तो यही समझ में आती है कि सभी बच्चों के अभिभावक शैक्षणिक प्रक्रियाओं के प्रति कितनी समझ रखते हैं। इस बात पर गहन विचार किया जाए तो यह कोई मुश्किल काम नहीं है क्योंकि निरक्षर कहाए जाने वाले अभिभावक भी बखूबी अपने बच्चे के सीखने के बारे में बता देते हैं।